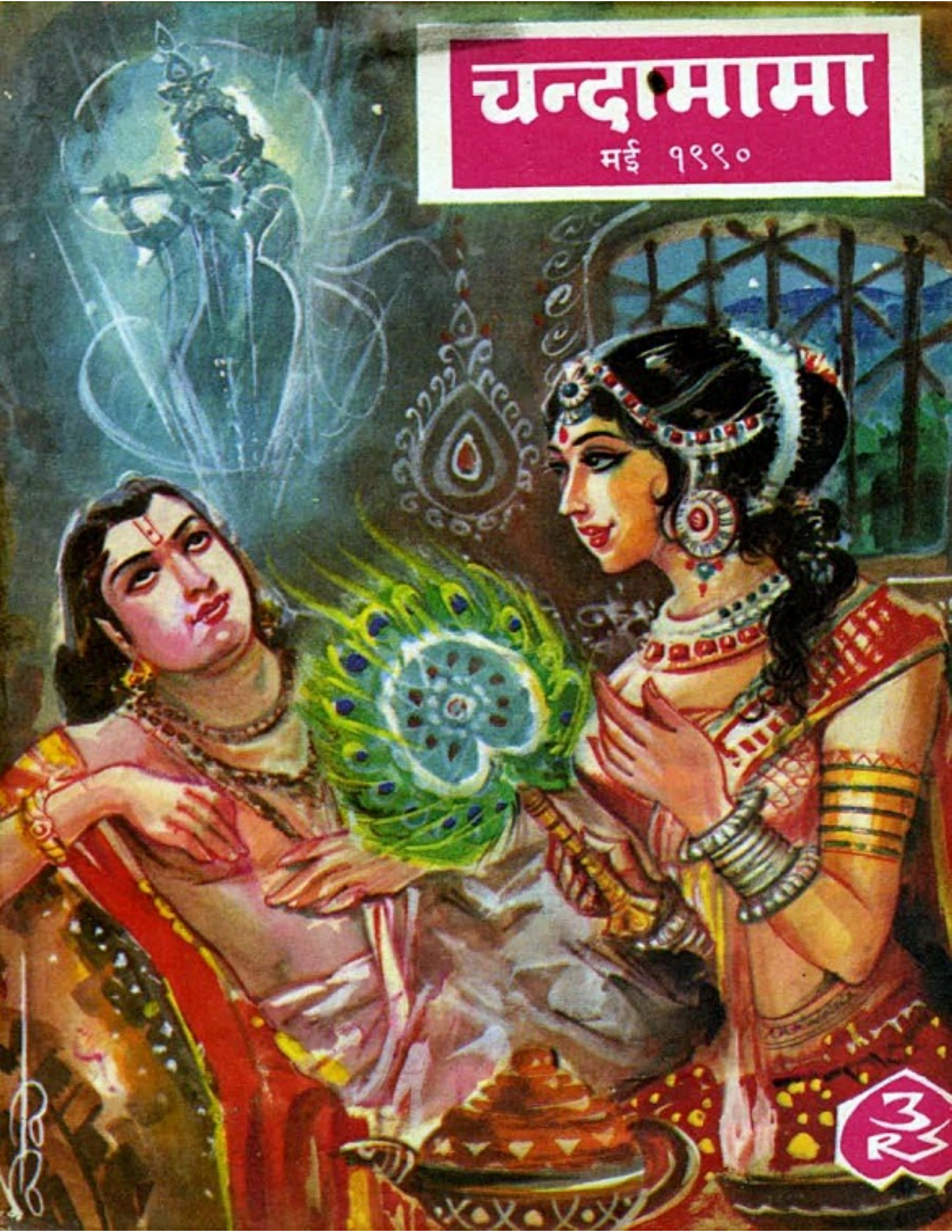
चन्दामामा
मई १९९०
3 Rs

कॉफी, चाय... या रसना?

भैया, फिर आ गईं गर्मियां.

जब पापा शाम को घर आते हैं

तो मम्मी उन्हें देती हैं...

नहीं, नहीं, कॉफी

नहीं. चाय भी नहीं. पर... रसना. और पता है,

दादाजी और दादीमाँ गर्मियों में चाय और कॉफी कप

नहीं छूते ? क्योंकि गर्मियाँ तो हैं रसना के लिये.

ऑरेंज ☐ पाइनएप्पल ☐ लाइम ☐ शाही गुलाब ☐ कच्चा आम ☐ जूस ब्लास्ट ☐ केसर इलायची ☐ मसाला सोडा (जलजीरा) ☐ ट्रॉपी-फ्रूटी ☐ मैंगो राइज़ ☐ ब्लैक करंट

ताज़गीभरा रसना

11 प्यारे स्वाद, प्यारे दाम में.

रसना, पापा, भैया और मैं.

हमारा हंसता रसना परिवार.

Mudra AEAMR5160 Hin

डायमंड कामिक्स में

सुनहरा अवसर

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनकर
बच्चों के जोक्स मुफ्त प्राप्त करें
साथ ही चाचा चौधरी का पोस्टर और
साबू का स्टिकर तथा
अपनी कापियों के लिये स्टिकर

अंकुर बाल बुक क्लब

सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा:—

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय की की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हो तो डायमंड कामिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

सदस्यता कूपन

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।

नाम .....
पिता का नाम .....
पता .....
डाकखाना ..... जिला .....

डायमंड कामिक्स

डायमंड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

ज़रा सी दूरदर्शिता, और ढेर सा प्यार...

थोड़ी सी बचत से भी, 21 वर्ष की उम्र होने तक आपका बच्चा लखपति बन सकता है.

यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए.

आज आपका लाडला आपकी बाहों में खेल रहा है. मुश्किल महसूस करने के लिए आपकी गोद ही उसके लिए काफी है. लेकिन कल हालात 'कल' आपके द्वार पर दस्तक देंगे तब उसे बाहर की दुनिया में कदम रखना पड़ेगा... ज़िंदगी की कठिन सच्चाइयों का सामना करना पड़ेगा.

तो अपने बच्चे का भविष्य संवारने के लिए आज ही कदम क्यों न उठाए जाएं? यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए. इस योजना के अंतर्गत एक निश्चित अवधि में थोड़ा सा संचार्य करने से 21 वर्ष की उम्र होने पर आपका बच्चा लखपति हो जाएगा.

प्र. अपने बच्चे को लखपति बनाने के लिए निवेश कैसे किया जाए?
उ. अगर बच्चे के जन्म होते ही आप बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश करें तो आपके सामने कई विकल्प हैं. (i) आप 15 साल तक प्रतिवर्ष रु. 1,100/- का निवेश करें. (ii) आप 9 सालों तक लगातार रु. 3,200 प्रतिवर्ष निवेश कर सकते हैं या लगातार 6 सालों तक रु. 1,900/- प्रतिवर्ष का निवेश कर सकते हैं (iii) या आप एक बार में ही रु. 8,500/- की पूंजी लगा सकते हैं.

प्र. और बच्चा बड़ा हो तो?
उ. 15 वर्ष की उम्र तक के लिए अलग-अलग योजना है. बाल उपहार वृद्धि कोष की जानकारी पुस्तिका में दी गई तालिका से इसकी विस्तृत जानकारी हासिल की जा सकती है. जानकारी पुस्तिका के लिए कर्म लिखिए.

प्र. बच्चों को ये उपहार कौन कौन दे सकता है?
उ. माता-पिता, संबंधी, मित्र, कंपनी या व्यावसायिक संस्थान.

प्र. निवेश की न्यूनतम राशि क्या है?
उ. रु. 500/- तथा उसके बाद रु. 100 के गुणकों में.

प्र. इस निवेश पर लाभ कितना होता है?
उ. प्रतिवर्ष 12.5% तथा हर पाँचवें वर्ष बोनस डिक्लेयर भी.

प्र. अवधि पूर्ण होने पर भी कोई सुविधा मिलती है?
उ. रकम निकालने की बजाय बच्चा इसे निकटतम मासिक आय यूनिट योजना में (मासिक आमदनी पाने के लिए) या यूनिट ट्रस्ट की अन्य योजनाओं में से किसी में भी निवेशित कर सकता है.

सी डी एफ की मुफ्त जानकारी पुस्तिका के लिए यूनिट ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय या मुख्य प्रतिनिधि या एजेन्ट, या चुने हुए हिन्दुस्तान पेट्रोलियम पम्पों,इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्पों से संपर्क कीजिए.
या इस कूपन को भरकर डाक द्वारा यूनिट ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय को भेज दीजिए.

कृपया मुझे बाल उपहार वृद्धि कोष की मुफ्त जानकारी भेजिए.

नाम : _____

पता : _____

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

(सार्वजनिक क्षेत्र की वित्तीय संस्था)

- 13 सर विट्ठलदास ठाकरसी मार्ग (न्यू मरीन लाइन्स), बंबई 400 020. फोन : 2963767/6201995.
- जलिल बलीर अहमद सैयद बिल्डिंग, 45, सेकेंड लाइन बीच, मद्रास- 600 001. फोन : 587433/580938.
- गुलाब भवन (सिंडिया बैंक), २री मंजिल, 6, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110 002. फोन : 3318638/3319786.
- 2 एंड 4 चेरंगाइल लेन, कलकत्ता- 700 001. फोन : 209391, 205322.

Sista's-UTI-29/90 HIN G

लॉज़ ऑफ़ दि जंगल गेम

स्नैप सफ़ारी गेम

मैगी क्लब: आओ मनाएं जंगल में मंगल!

अपने उपहार मुफ़्त लो!

मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले हिस्से से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के मुफ़्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक उपहार मिल जाएगा.

यह मत भूलो :

अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो हमें लिखते समय अपने मनचाहे उपहार के नाम के साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखना. और यदि तुम पहले से मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपना मेम्बरशिप नम्बर भी साथ भेजना.

फ़ॉरेस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क

डिज़्नी टुडे कॉमिक

जंगल स्टैन्डीज़ सेट

हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055

और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!

HTA 6679 HIN

अपनी श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट पेंसिलें

हर एक के लिए, सबके लिए

लायन
प्रीमियर®
एच बी पेंसिलें

सुरेख, सुंदर, एक्ज़ेक्यूटिव और हर उस व्यक्ति के लिए जिन्हें चाहिए लिखने का नया अंदाज़. सहज और आसान लिखाई के लिए लगातार गहरी छाप. न टूटने वाली नोंकों के लिए माइक्रोनाइज़्ड लैड – जो इसकी उत्कृष्टता में लगाए चार-चांद!

लायन
पिंकी®
पेंसिलें

लायन 'पिंकी' पेंसिलें. खूबसूरती और पूर्णता की पहचान. बच्चों के मन भाए इसकी सुंदर डिज़ाइनें और मनभावन रंग. न टूटने वाली नोंकों के लिए मज़बूती से जोड़ी गयी लैड. उस पर सहज और सरल लिखाई – इसकी खूबसूरती में लाए और निखार!

लायन
जीमैटिक®
ड्रॉइंग पेंसिलें

आर्टिस्ट, आर्किटेक्ट, डिज़ाइनर और इंजीनियरों जैसे व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए एक परिपूर्ण इकाई. जो इनकी कारीगरी में भरे परिपूर्णता के रंग. एच से ६ एच और बी से ६ बी, एच बी एवं एफ़ तक की १४ विविध श्रेणियों में उपलब्ध.

लायन पेंसिल्स लि.
९५, पारिजात, मरीन ड्राइव,
बम्बई ४०० ००२.

National-358 HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी' संचालक : नागिरेड्डी

पर्यावरण प्रदूषण

हाल ही अंतर्राष्ट्रीय उपभोक्ता संघ के संचालक अन्वर फाजल ने जापान में 'हम सब का भविष्य' अंश पर भाषण देते हुए इस प्रकार चेतावनी दी–"दिन-ब-दिन पानी और हवा दूषित होते जा रहे हैं, उष्णमंडल वन भी समाप्त होते जा रहे हैं। इस का बुरा असर पड़ रहा है प्राणवायु की परत पर, जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुयी है। इस ओर तुरंत हमारा ध्यान जाना बहुत ज़रूरी है, चूंकि इस भयानक पर्यावरण प्रदूषण से प्राणवायु घटती जा रही है। आगे भी ऐसा ही चलता रहे तो एक दिन यह सारी पृथ्वी हमारे लिए रहने लायक़ बच नहीं पायेगी। इस लिए अभी से हमें सतर्क होना चाहिए, तरह-तरह से अविलंब क्रियाशील बनना चाहिए।"

ठीक कहा था अन्वर फाजल ने। हम सब को अलग-अलग हमारी ताक़त के बलबूते पर इस ज़हर को रोकने की कोशिश करनी चाहिए। नये-नये कानून बनाकर इस खतरनाक प्रदूषण की रोक-थाम के लिए हर सरकार को आगे आना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सभ्य देशों को इस बारे में उपयुक्त निर्णय लेना चाहिए, इस ओर सावधानी बरतनी चाहिए ताकि इसी प्रकार जल, थल और वायु का प्रदूषण बढ़ता न जाये। अच्छा, हम क्या कर सकते हैं? बहुत कुछ! बहुत खतरनाक असर पड़ रहा है जंगलों को काटने और पानी को गंदा बनाने का। इस ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करके, उन्हें सजग बनाने का दायित्व हरेक नागरिक पर है।

वर्ष : ४२ मई १९९० अंक : ९

एक प्रति : रु. ३/– :: वार्षिक चन्दा : रु. ३६/–

CHANDAMAMA PUBLICATION

FIRE ENGINE

SUPER DUMPER

INTRODUCING

The Sammo range of mechanical toys. Every toy made to exacting standards set by our collaborators — Sammo Corporation of S.Korea, one of the leading toy manufacturers in the world.

Toys crafted to look like the real thing. With dynamic crackling sounds. Glossy, non-fading colours. Exciting colourful packaging which prevents damage and shop soiling.

Smooth edges and non-toxic colours ensure the child's safety.

Indeed, these are toys children will love playing with, toys which parents will love to buy for them.

WRECKER

ZAP GUN

SAMMO

In collaboration with Sammo Corporation S.Korea

CHANDAMAMA TOYTRONIX

Watch out for more additions to the Sammo Collection

CHANDAMAMA TOYTRONIX

Chandamama Toytronix Pvt Ltd,
Chandamama Buildings, 188, NSK Salai,
Vadapalani, Madras - 600 026.
Tel: 423423 Telex: 041-25047 DOT IN

विश्व समाचार:

सत्ताईस साल बाद का सूर्योदय

रंगभेद के विरोध में संघर्ष करनेवाले दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के महान नेता नेल्सन मंडेला आख़िरकार रिहा हो गये सत्ताईस साल और सात माह की लंबी कैद से । दक्षिण अफ्रीका में गोरी सरकार, जो रंगभेद के रवैये का पालन करती आयी आज तक, विश्व के बदलते राजनीतिक परिदृश्य के दबावों से मुक्त नहीं रह सकी और इसी लिए उठाया यह क़दम । रंगभेदी सरकार की कमर तोड़ने के उपाय कर रही है आज की हवा । मंडेला के प्रति भक्तिभाव, श्रद्धा, असीम प्रेम लोगों में इस क़दर जागृत हुए कि लोग मंडेला की रिहाई को मानने लगे मानवतावाद की एक बड़ी जीत । जीते दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपिता बन गये नेल्सन मंडेला ।

अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी छोर के प्रांत को ही कहते हैं दक्षिण अफ्रीका । इस के चार भाग हैं केप ऑफ गुड होप, नेटाल, ट्रान्सवाल और आरेंज फ्री स्टेट जिन पर पहले गोरी सरकार का पालन था । सन् १९६० में दक्षिण अफ्रीका को आज़ादी मिली । इस की राजधानी है प्रिटोरिया । इस देश की आबादी तीन करोड़ से बढ़कर है और यह भूभाग फैला है १२,२१,०३७ वर्ग किलो मीटरों में ।

दुनिया भर में यही एक देश है जहाँ सोना और हीरे श्रेष्ठतम मिलते हैं बेशक ज़्यादा से ज़्यादा । मगर यहाँ का पालन है अधर्म-

अन्याय से भरा कलंकित । गौरतलब है कि यहाँ की गोरी सरकार ने दिये गोरों को ही अनेक अधिकार जब कि यहाँ गोरों की आबादी थी बहुत कम । उसने कालों पर लगा दीं अनेक पाबंदियाँ जब कि यहाँ बहुसंख्य लोग काले ही थे । रंगभेद का रवैया अपनाकर गोरी सरकार ने यहाँ गोरों के अलग और कालों के अलग कानून बना दिये । इस रंगभेद के विरोध में संघर्ष कर रहे हैं यहाँ के लोग जिन के साथ संपूर्ण संसार की हमदर्दी है । नेल्सन मंडेला था नेता 'अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस' का और चलाता रहा मुक्ति संग्राम । गोरी सरकार ने नेल्सन मंडेला को बंद कर रखा जेल में पूरे सत्ताईस साल और ११ फरवरी को उसे रिहा कर दिया । जब मंडेला था जेल में, उस की पत्नी विनी ने उस की अनुपस्थिति में आंदोलन में ऊर्जा भरी थी ।

आज गोरी सरकार को पता चला कि कालों पर अत्याचारों का सिलसिला बंद करने का वक़्त आ चुका । रंगभेदी निज़ाम के ख़िलाफ नफ़रत और आक्रोश की लहर दक्षिण अफ्रीका की सीमाओं तक सीमित नहीं रही जो अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले रही है । चौतरफा विरोध की आवाज़ गूँज उठने लगी तो दक्षिण अफ्रीका के अध्यक्ष एफ़. डब्लयू. डी क्लार्क हो गये थे सचेत और अपनी क़ौम के तौर-तरीकों के विपरीत ले लिया निर्णय और कर दिया मंडेला को रिहा । हाल-फ़िलहाल के हालत को देखते दावे के साथ कह नहीं सकते कि क्लार्क के असली इरादे क्या हैं । दक्षिण अफ्रीका में नए युग की शुरूआत कितनी सार्थक है, यह वक़्त ही कहेगा । हम इतना तो कामना कर सकते हैं कि आपसी सदभावनाएँ बढ़ें श्वेत तथा श्याम क़ौमों के बीच, क्लार्क तथा मंडेला के बीच शांतिपूर्ण समझौता हो जाए, और मिट जाएँ घिनौने रंगभेद ।

लोकेश की समस्या

विश्रामपुर में एक व्यापारी रहता था । नाम था उस का लोकेश । साठ साल की उम्र में उसे कारोबार से छुट्टी मिल गयी । सारे कामकाज उस का बेटा केशव संभालने लगा । लोकेश को मिला पूरा आराम ।

घर पर बैठे रहने से लोकेश को वक़्त गुज़ारना मुश्किल लगता था । बुढ़ापे की वजह से उस पर झक सवार होती और कुछ न कुछ वह बड़बड़ाता । बहू, बेटे, बीवी को तंग करता था ।

दिन भर मनचाहे पकवान बनवा लेता, पेटभर खाता और दिन में अकसर खर्राटें लेकर सोता था लोकेश । इस लिए रात में उसे नींद नहीं आती थी । इसे कोई बीमारी समझता था, सब से वह इसके बारे में कहता फिरता था ।

यह सुनकर हँस देते थे उस की यह समस्या सुननेवाले उसके दोस्त-रिश्तेदार ।

"देखो लोकेश, यह कोई बीमारी नहीं है । पहले जैसे तुम मेहनत नहीं कर रहे हो । चूंकि सारा कारोबार तुम्हारा बेटा संभाल रहा है, अब तुम आराम से दिन गुज़ार रहे हो । बदन से पसीना नहीं छूटता । थकते नहीं हो । इसीलिए ऐसा होता है ।" लोग समझाते थे ।

रात को जो सुख-चैन से सोते हुए दिखाई देते, उन पर जलता था । बेचारा कर भी क्या पाता? गहरी नींद में रही पत्नी को जगाकर पूछने लगता, "देखो, दूध की केतली पर ढक्कन चढ़ाया कि नहीं? वरना बिल्ली दूध पी जाएगी । हाँ, चौके की सफ़ाई कर दी या नहीं?"

इसी तरह बेटे को भी नींद से जगाकर बेतुकी हांकता था, "बहू, क्या कर रही है? बच्चे को दूध पिलाया कि नहीं?"

घोड़े बेचकर सोते रहते थे उस वक़्त वे सब । ऐसे वक्त पर उन्हें जगाकर ऐसे बेतुके

योगेश चौहान

सवाल करता तो वे गुस्से से लाल-पीले हो जाते । मगर, घर का बड़ा और बूढ़ा था वह, इसलिए वे किसी तरह गुस्सा पी जाते और कड़ी आवाज़ में कह देते कि आगे कभी उन की नींद यूं बरबाद न किया करे । अब बिचारे लोकेश की हालत और बुरी हो गयी ।

रात को नींद नहीं आती । घर में किसी को जगा नहीं पाता, ताकि थोड़ी देर बात करते रहे । इसलिए लोकेश घर से निकला एक रात को, सुनसान गलियारों में घूमते-घूमते तालाब के पास आया । वहाँ जो इमली का पेड़ था, उस के नीचे ज़मीन पर कोई लेटा हुआ था । खर्राटें लेकर सो रहा था ।

उसे देखते ही लोकेश के मन में जलन हुयी । घर में आरामदेह-मुलायम बिस्तर पर लेटने पर भी खुद नींद से वंचित रह जाता । यहाँ सख्त ज़मीन पर ही कोई आराम से सो रहा था ।

लोकेश ने उस सोने वाले की पीठ ठोंकते हुए पूछा, "कौन हो भाई, इतने आराम से सो रहे हो यहाँ?"

सोनेवाला घबड़ाते हुए उठा, बगल की छानबीन करके एक सोंटा हाथ में लिया । तब उस ने पूछा, "कौन हो तुम? चोर-उचक्के हो या पिशाच?"

लोकेश ने सोंटे की ओर डरे–सहमे देखते हुए उत्तर दिया, "मैं न चोर-उठाईगीर हूँ और न भूत-प्रेत । मेरी एक अनोखी बीमारी है रातों में नींद न आना । घर में सब आराम से सोते रहते हैं और किसी को जगाता तो मुझ पर गुस्सा करने लगते । भाई, तुम ही बोलो, मैं क्या करूँ? इसी लिए चलते-चलते इस समय यहाँ चला आया । अच्छा, अब तुम अपनी बात कहो ।"

इस पर उस ने कहा, "मैं रात में गाँव का पहरा देनेवाला गबड़ू हूँ । दिन भर घर के कामकाज, एक पल की भी फ़ुरसत नहीं मिलती । पोते-पोतियाँ मुझे ज़रा भी सोने नहीं देते । मैं क्या करूँ? इसीलिए बीच-बीच में मैं ज़रा सो लिया करता हूँ ।"

लोकेश ने थोड़ी देर सोचा और कहा, "देखो गबड़ू, तुम दिन में सो नहीं पाते, मुझे रात में नींद नहीं आती । इस लिए समय काटने कें लिए हम शेरबकरी खेलेंगे । चांदनी रात है न, चारों ओर काफी प्रकाश

फैला भी रहा ।"

"शेरबकरी खेलना मुझे भी अच्छा लगता है, मगर पहरा कौन करेगा? यदि कहीं कोई चोरी होती तो समझो, मुझे नौकरी से हटा दिया गया । इस लिए, मेरी एक बात सुनो । हम दोनों यहाँ बैठे शेरबकरी खेलेंगे ज़रूर । मगर बीच-बीच में तुम मेरी जगह गाँव में एक बार घूम आकर पहरा देते रहो । इस बीच मैं थोड़ी देर नींद ले सकता हूँ । तुम्हारा भी मनबहलाव हो जाएगा और मेरा भी काम बन जाएगा ।" पहरेदार गबडू ने कहा ।

लोकेश इस के लिए तैयार हुआ । तब दोनों उस पेड़ के नीचे चांदनी में जमकर बैठ गये, शेरबकरी खेलने लगे । थोड़ी देर बाद गबडू ने जम्हाई लेते हुए कहा, "अब मुझे नींद आ रही है ।" फिर उसी वक़्त ज़मीन पर लुढ़ककर, सोने लगा ।

गबडू का सोंटा लेकर लोकेश पहरे पर निकला ।

गबडू के साथ शेरबकरी खेलना जैसे अच्छा लगा, वैसे यूं गलियों-कूचों में गबडू का सोंटा लेकर घूमना-फिरना भी लोकेश को अच्छा ही लगा । जब पौ फटने का वक़्त हुआ, तब जाकर लोकेश का पहरा बंद हुआ । फिर सोंटा लौटाकर घर आया ।

इस तरह रोज़ लोकेश रात के वक़्त घर से खिसक आता, गबडू से थोड़ी देर खेलता, फिर गबडू के काम पर गलियारों में सोंटा लेके चलता-फिरता । यही कार्यक्रम बन गया रोज़ रातों का उस का । लोकेश के बेटे केशव को पिता पर शक हुआ । एक रात को पिता के पीछे लुकते-छिपते जाकर उस ने सारी

बात जान ली ।

लोकेश घर से निकला आधी रात को, तालाब के पास रहे इमली के पेड़ के नीचे गया । गबड़ू से शेरबकरी खेल खेला । फिर गबड़ू का सोंटा लेकर गलियों-कूचों में पहरा देता रहा ।

पौ फटते वक़्त लोकेश सोंटा गबड़ू के हाथ थामकर, चुपके से घर वापस आ पहुँचा । यह सब कार्यक्रम गुप्त रूप से केशव ने देख लिया ।

उस रात केशव को ठीक से नींद नहीं आयी । पिता की इस करतूत के बारे में मां या बीवी से कुछ नहीं बोला । वह इसी बात पर सोचने लगा कि पिता के बरताव में परिवर्तन कैसे लाया जाये ।

इसी हालत में केशव का मामा गोस्वामी वहाँ आया । अपने मामा से केशव ने पिता के बरताव के बारे में कह दिया और उस की सलाह माँगी इस तरह—

"देखिए मामाजी, पिताजी इस तरह रोज़ रातों में गाँव का पहरा दे रहे हैं । उस गबड़ू से मिलकर शेरबकरी खेल रहे हैं खुलेआम! यदि कोई जानपहचान का देख ले तो? अब क्या किया जाये, बताइए ।"

इस पर गोस्वामी ने हँसते हुए कहा, "यह कोई बड़ी समस्या नहीं है । तुम्हारे पिता को दुरुस्त करना आसान काम है । आज रात को मैं फाटक के पास खाट डलवाकर सोना चाहता हूँ । मेरी बगल में एक सोंटा रखो । पौ फटते वक़्त जब तुम्हारा पिता घर लौटेगा, तब क्या होगा—यह तुम कहीं छिपकर खुद देख लेना ।"

अपने मामा की बात मानकर, केशव ने उस के कहे मुताबिक ही किया ।

उस रात को अपनी मनमानी खतम करके—यानी गबड़ू के साथ शेरबकरी खेलना, गलियारों में सोंटा लेकर पहरा देना और अंत में गबड़ू को जगाकर सोंटा लौटना आदि कार्यक्रम पूरा करके जब लोकेश घर वापस आया तो बाहर खाट पर सोनेवाला गोस्वामी उठा ।

सोंटा उस वक़्त लोकेश की तरफ बढ़ाते हुए गोस्वामी ने कहा, "बहनोई, पहरेदार गबड़ू को सोंटा लौटाना भूल गये हो । देखो, यह रहा सोंटा ।"

"गबडू कौन? सोंटा क्या? क्या कहते हो तुम?" लोकेश ने घबड़ाहट छिपाने की कोशिश करते हुए पूछा ।

इस पर ठठाकर हँसते हुए गोस्वामी ने कहा, "देखो, रातों में तुम गबडू के साथ शेरबकरी खेलते हो, गलियों-कूचों में सोंटा हाथ में लेकर पहरा देते हो । यह राज तुम्हारा बेटा जानता है । अब मुझे भी मालूम हुआ । गाँव के कुछ लोगों को भी यदि इस का पता चलता तो आपस में वे खुसुरफुसुर करेंगे और तुम्हारी दिल्लगी करने लगेंगे ।"

गोस्वामी ने मज़ाकिये अंदाज में कहा था यह सब । मगर बात ऐसी नहीं थी । इसलिए लोकेश ठिठुर सा गया । गहरी सोच में पड़ गया । गोस्वामी की बातों में जो हक़ीकत थी, उसे समझने में उसे देर नहीं लगी । अपनी करतूत पर अब लोकेश पछताने लगा ।

"हाँ, तुम्हारा कहना मानता हूँ । मगर, मेरी बात कौन सुनेगा? रातों में मुझे नींद नहीं आती । रात भर मुझे क्या करना चाहिए? कैसे वक़्त गुज़ारूं? तुम ही बताओ ।" लोकेश ने पूछा ।

"सुनो, दिन भर सोते रहते हो तुम । इसी लिए रात तुम्हें नींद नहीं आती । दिन में कुछ न कुछ काम किया करो । कारोबार का छोटा-मोटा काम करते रहो । बच्चों के साथ खेलो, कूदो । घर के कामधाम करो । इस से तुम्हारे बेटे पर रहे काम का बोझ भी थोड़ा घटेगा । उसे भी अच्छा लगेगा । दिन में काम करने से जो थकान होगी, उस से तुम्हें अच्छी नींद आएगी । तुम्हारी समस्या का हल हो जाएगा । मैं भी थोड़े दिन यहीं रहूँगा । देख लूंगा कि ऐसा करने पर तुम्हें नींद क्यों नहीं आती ।" गोस्वामी ने मंदहास के साथ कहा ।

ये बातें लोकेश को अच्छी लगीं । उसी दिन से अपना कार्यक्रम नया शुरू कर दिया । दिन भर मेहनत करने से अब लोकेश काफी थक जाता था । इस लिए रात को उसे सुखद नींद आने लगी । रातों खर्राटें लेकर जब सोने लगा तो यह देखकर केशव और गोस्वामी बहुत खुश हुये ।

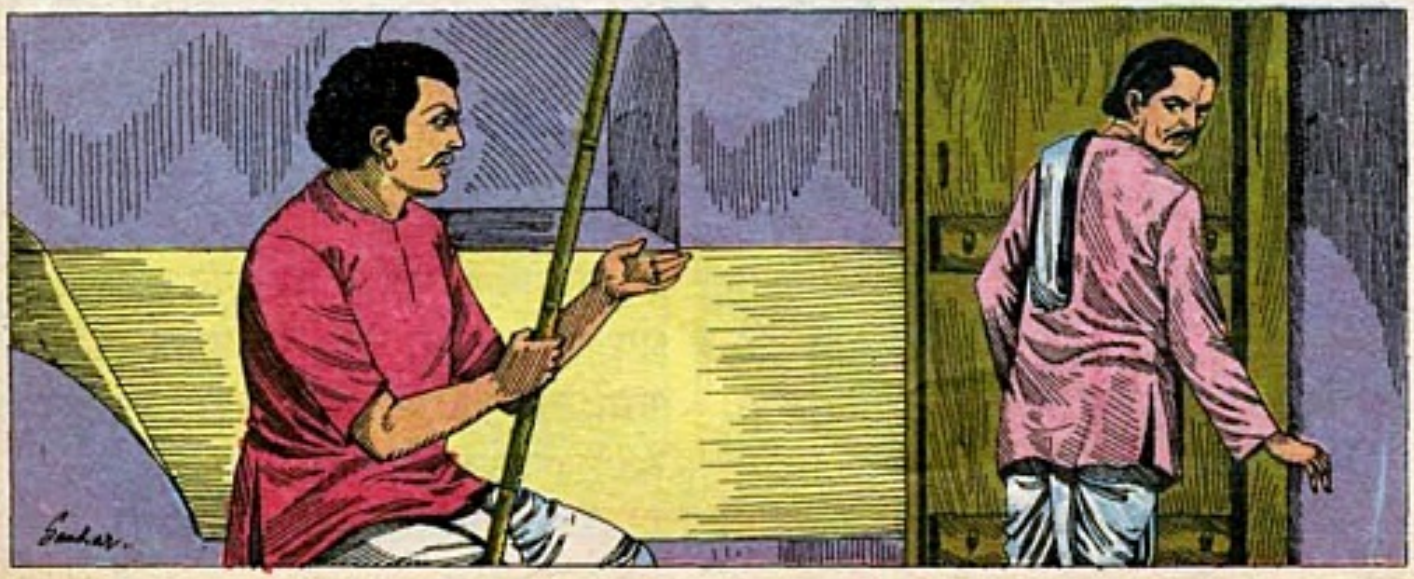

यश की चाह

सोनपुर का राजा बड़ा ही हंसोड़ मिज़ाज़ का था । साथ ही काफी होशियार भी था । एक बार उस ने अपने राज्य में एक घोषणा करवायी । जिस में ज़रा भी यश की चाह नहीं रहेगी, ऐसे लोग ही दरबार में अमुक दिन आयें ताकि उन का सम्मान किया जाएगा—यही था उस घोषणा का खुलासा ।

यश की चाह न रखनेवालों का सम्मान करने का दिन आया । कुछ लोग उस दिन दरबार में हाज़िर हुये इस सम्मान के वास्ते । उन्हें देखकर राजा ने हँसी-मज़ाक़ में कहा, "अच्छा, तुम सब इस सम्मान के लिए अपने को योग्य समझते हो । है न? तुम लोगों का यह अंदाज़ा सरासर ग़लत है । चूँकि तुम लोग सम्मान की चाह से आये हो यहाँ, यश की चाह से परे नहीं हो । इस तरह इस सम्मान के लिए तुम लोग लायक़ नहीं हो । अब तुम जा सकते हो ।"

तब उन के बीच से प्रमोद नामक एक चालबाज़ आगे आया । उसनें राजा से कहा, "महाराज, मैं नहीं जानता कि दूसरे लोग कहाँ तक इस सम्मान के लिए योग्य हैं । मगर मैं अपने बारे में यह कह सकता हूँ कि सम्मान के लिए मैं एकदम लायक़ हूँ । मुझ में यश की चाह ज़रा भी नहीं है ।"

"बात ऐसी है तो सम्मान के वास्ते यहाँ आये हो क्यों? ऐसा आना क्या यश की चाह नहीं कहलाता?" राजा ने पूछा ।

इस पर प्रमोद ने कहा, "प्रभु, एक वजह है इस की । मेरे गाँव की उन्नति के लिए मैंने अथक परिश्रम किया । कई बार मेरे गाँव के लोगों ने मेरा सम्मान करने की कोशिश की । मगर मैंने ठुकरा दिया, चूँकि मुझ में यश की चाह बिलकुल नहीं रही । अब, भलाई के कई काम करके भी सम्मान ठुकराने वाले के रूप में मुझे अपने आप मिल गया है यश । कम से कम अब यदि मैं सम्मान स्वीकार नहीं करता तो मेरा यश और भी बढ़ जाएगा जिसे मैं ज़रा भी पसंद नहीं करता । महाराज, मज़बूरन मुझे यहाँ आना पड़ा ।"

राजा खुश हुआ उस की चतुरता पर । उस का सम्मान करवाया ।

—राधा अग्रवाल

[८]

[पूर्व कथा: सुमेध राज की गद्दी पर साज़िश करके बैठा था वीरसिंह, मगर वह सुख-चैन से रह नहीं सका । पता नहीं चला कि बूढ़े मंत्री तथा वसंत की जिस नक़ाबपोश वीर ने रक्षा की, वह कौन था । किस ओर से कौन करेंगे विद्रोह और किस तरफ़ से आए बला कौन सी, यही शक उस के मन में रहता था हमेशा । इसी डर से सताने लगा वह लोगों को ।]

दिन गुज़रने लगे । साथ-साथ वीरसिंह के मन में अड़ोस-पड़ोस के राज्यों को जीतने की ज़ोरदार ख़्वाहिश उठने लगी । इस वजह से वह सुख-चैन से रह नहीं पाया ।

सरदारों को बुलाकर उसने अपने मन की इच्छा बता दी । उस के सरदार भी यह चाहने लगे कि अड़ोस-पड़ोस के राज्यों पर हमला करने का मौक़ा आए, ताकि उन राज्यों के धन-धाम लूट सकें । इस से तो वीरसिंह के साथ-साथ उन सरदारों का भी काफी फ़ायदा होगा और वे लालची सरदार चाहते थे यही । इस लिए वे ख़ुश हुए ।

वीरसिंह के सरदारों में ख़ास एक था कपालकंठ । उसे ही सिपहसालार बना दिया था वीरसिंह ने । दूसरे दिन रात को उसे अपने यहाँ बुलवा लिया, तनहाई में उस के साथ बैठा और कहा वीरसिंह ने यूँ, "मुझे लगता है

कि अब हमें पड़ोसी राज्यों पर हमला करना चाहिए । क्या कहते हो?"

यह बात सुनते ही कपालकंठ का चेहरा खुशी से खिल उठा । इसी वक़्त की वह कर रहा था इतने दिनों से प्रतीक्षा । इस लिए जोश-खरोश के साथ उसने कहा, "हुजूर, मुझे भी ऐसा ही लगता है । इस के लिए यही अच्छा वक़्त है । अब यदि हम पड़ोसी राज्यों पर युद्ध की घोषणा कर दें तो जनता का ध्यान खिंच जाएगा उस तरफ़ । वे इसी बारे में उलझे रहेंगे कि युद्ध में हार-जीत होगी किस-किस के नसीब में । इस तरह उन का ध्यान उस ओर जाएगा, चुनांचे आप के प्रति रहा असंतोष घट जाएगा । पड़ोसी राजों को हराने से जो धन-दौलत और रुपया-पैसा मिलेगा, उससे हमारा राज हो जाएगा समृद्ध-संपन्न । आप की सेवा में रहे सब बन जाएंगे मालदार और ख़ुशनसीब । देश की संपन्नता की जनता पर होगा अच्छा प्रभाव और इस तरह चहुँदिस खुले दिल से आप की होगी कद्रदानी ।"

इन बातों पर वीरसिंह के दिल की कली खिल गई । उस ने सिपहसालार से कहा, "हाँ, तुम्हारी बात सही है । इससे हमें नफ़ा ही नफ़ा होगा, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ । अच्छा, बताओ । पहले किस राज पर कर लें चढ़ाई?"

वीरसिंह की तारीफ़ से कपालकंठ हो गया, एकदम खुश और नाज़ से उस की छाती फूल गई ।

"इस बारे में सोच लिया था मैं ने बहुत पहले ही । हमारा हमला शुरू होना चाहिए अमृतपुरी से । इस की है वजह । शांतिदेव का मामा है अमृतपुरी का राजा सत्यसेन । आप से जलता था वह । हो सकता है, वह भी आप पर रही दुश्मनी से लड़ाई की तैयारियाँ कर रहा हो । मैंने इंतजाम कर दिया कि अमृतपुरी से आनेवाले सब को कैद कर दिया जाय, चूँकि मुझे शक होता है कि उन में से कई ज़रूर होंगे छुपेरुस्तम ।" कपालकंठ ने कहा ।

वीरसिंह को यह बात अच्छी लगी । उसने कहा, "हाँ, ठीक किया तुम ने । मैं भी तुम्हारेजैसे ही सोच रहा हूँ । मुझे जासूसों से पता चला कि सत्यसेन इन दिनों बीमार पड़ा

हुआ है । यह तो हमारे लिए एक बेहतर मौक़ा है । चुनांचे,ज़ल्दी लड़ाई की तैयारियाँ कर दो । हाँ, नदी पार करने के लिए कई नौकाएँ चाहिए, अभि से काफी नौकाओं का प्रबंध करना शुरू कर दो ।"

इस पर हंसते हए सिपहसालार ने कहा,"आप किसी भी बात की फ़िक्र तो मत कीजिए । हमारे पास काफी नौकाएँ हैं । इन दिनों सुधारा नदी का पानी गहरा नहीं होता, इस लिए कछ सिपाही तैरकर नदी पार कर सकते हैं । वैसे तो, जो भी नौकाएँ हमारे पास हैं अब, उन से भी शायद हमारा काम चल सकता है ।"

इस पर वीरसिंह एक मिनट के लिए चुप रहा । फिर पूछा कपालकंठ से यूँ, "अच्छा, देखो कपालकंठ, हमें नदी पार करने के लिए सेना को कितने दिनों में तैयार कर सकोगे?"

इस पर ज़रा भी सोचे बिना सिपहसालार ने फुर्ती से जवाब दिया, "हूजूर, आप चाहें तो कल रात को ही हम नदी पार करने के लिए निकलेंगे, सब तैयार हैं ।"

वीरसिंह ने ख़ुशी के साथ कहा, "अच्छा, ऐसी बात है तो हम परसों रात को ही निकलेंगे । मैं इस बात पर ख़ुश हूँ बहुत कि मेरे विचार पहले ही जानकर तुमने ये सारी तैयारियाँ कर दीं । अमृतपुरी को जीतकर जब हम आएँगे लौटकर, तब मैं तुम्हारा अच्छा सम्मान कर दूँगा । सिपहसालार हो तो ऐसा होना चाहिए!"

"हूजूर, आपकी सूझबूझ है लाजवाब । आप ठहरे बुद्धिमान महान । परसों जब अचानक हमारी सेनाएँ रात में अमृतपुरी को घेर लेंगी, तो अमृतपुरी के लोग हो जाएँगे हैरान । सुबह होते-होते वह राज आ जाएगा हमारे क़ब्ज़े में ।" कपालकंठ ने उत्साह के साथ कहा ।

नए सिपहसालार के जोश व ख़रोश पर वीरसिंह हो गया एकदम ख़ुश । उसकी पीठ थपथपायी ज़ोर से । इस पर मारे ख़ुशी के कपालकंठ ने बड़े बहुत अदब के साथ प्रणाम किया वीरसिंह को, फिर चल दिया वहाँ से ।

उसी रात को कपालकंठ ने सरदारों को बुलवाया, वीरसिंह का निर्णय बता दिया उन्हें । वे भी हुए बहुत ख़ुश । वे अच्छी तरह जानते थे कि अमृतपुरी की सेनाएँ अपनी

सेनाओं के सामने बड़ी देर तक टिक नहीं पाती । दुर्बलों पर हमला करके उन्हें पीड़ा देना दुष्टों की आदत होती है । इसी में उन्हें बड़ा आनंद मिलता है । इस लड़ाई के बाद लूटमार में उस राज की धन-दौलत पर भी क़ब्ज़ा होगा अपना, यह बात भी उन्हें देने लगी बड़ी रज़ामंदी और राजीख़ुशी । सभी ने मिलकर बना ली भली योजना कि किस तरह हमला किया जाए । फिर कपालकंठ ने कहा, "इसी पल से लड़ाई की तैयारियाँ हमें कर लेनी चाहिए । यह ख़बर यदि बाहर गई तो तुम में से एक भी नहीं बचेगा ज़िंदा । याद रख लो और रहो सावधान!" इस तरह अपने सरदारों को कपालकंठ ने किया सचेत-सतर्क ।

फिर भी नहीं हुआ ख़ास फ़ायदा । एक सरदार वहाँ से सीधे पहुँचा एक मैख़ाने में और पीने लगा जमकर शराब और मैख़ाने के मालिक से छांटने लगा बातें । मैकश की सदा-सर्वदा होती है यही हरकत ।

"तुम्हें पचास चांदी के टके देने में कर रहा हूँ न देर । अब ज्यों ही लौटूँगा मैं, चांदी के नहीं-एकदम सोने के पचास टके मैं दे दूँगा तुम्हें ।"

मैफ़रोश चौंका इस बात पर । पूछा ताज्जुब से, "कहाँ जा रहे हो? कहाँ से लौटने के बाद?"

मैफ़रोश के सवाल पर कहा उस सरदार ने, "ज़ोर से मत पूछो । यह राज़ है एक । मैं ज्यों ही नदी पार करके जाऊँ और वापस आ जाऊँ तब! समझे? अब ज़्यादा सवाल मत करना ।"

मगर उस मैफ़रोश ने उस सरदार से पूछ ही लिया एक और सवाल, "अच्छा, कब लौट आओगे?"

"कल के बाद कभी भी । चूंकि हमला तो होगा कल रात को ही ।" सरदार ने मुस्कराहट के साथ कहा । मैख़ाने के सामने दहलीज़ के पास बैठा एक नौजवान ये बातें सुन रहा था । मगर यह बात पहचानी नहीं मैफ़रोश ने या मैकश सरदार ने । वह नौजवान देखने में भिखमंगा सा दिखाई दे तो रहा था, मगर उस की आँखों में झलक थी साहसी और बुद्धिमान होने की । वही था वसंत । रहता था अमृतपुरी में वह । मगर

छद्मवेश में सुमेध राज में रहते साहसी तथा बुद्धमान नौजवानों को अपनी तरफ़ में लेकर बना लेता था उन्हें अपने तरफ़दार । वह चाहता था कि वीरसिंह का शासन नहीं चले ताकि लोगों की हो भलाई । उस शासन का अंत होगा कैसे, होगा यह मुमकिन कैसे-यही सोचता था वसंत हमेशा । मगर अभी तक उसकी समझ में नहीं आया कि उस सपने को कैसे साकार बना लिया जाय । नक़ाबपोश बहादुर ने जब वसंत की रक्षा की वीरसिंह के द्वारा दी हुई मौत की सज़ा से, तभी वसंत का उस नक़ाबपोश साहसी पर जम गया था विश्वास ।

कभी कभी नक़ाबपोश बहादुर कहता था यूँ, "वीरसिंह के अत्याचारों से हमें भोलेभाले और बेकुसूर जनता की रक्षा करनी चाहिए । मगर ऐसा करते वक़्त हमें हिंसा का रास्ता अपनाना नहीं चाहिए । वीरसिंह के किसी अनुयायी को, चाहे वह सरदार हो या सिपाही मामूली, हानि पहुँचानी नहीं चाहिए । वे सब अपने अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन करते हैं । मगर कोई भी अधिकारी अबोध जनता को या स्त्रियों-बच्चों को हिंसा देते रहें तो हमें चुप नहीं रहना चाहिए । ऐसी हालत में उन्हें दण्ड देने के लिए हमें पीछे नहीं हटना चाहिए ।"

वसंत ने बहुत कोशिश की उस नक़ाबपोश बहादुर को पहचानने की । मगर यह मुमकिन नहीं हुआ । पूछने पर उस बहादुर ने कहा वसंत से, "वक्त आए तो हर बात का चल जाता है पता । तब तक सब्र करना होगा बुद्धि मानी ।" उस स्वर की संजीदगी पर वसंत हो गया था चुप ।

अब वसंत धीरे से मैख़ाने से बाहर चला आया । द्वार के आगे फैली हुई थी अँधियारी चारों ओर । एक खंभे से बंधा था सरदार का घोड़ा । अंदर मैफ़रोश और सरदार अब तक कर रहे थे बातें । घोड़े के पास पहुँचा वसंत, फिर उस पर हाथ फेरते हुए प्यार दिखाया वसंत ने ताकि वह घोड़ा शुरू न करे हींसना-हिनहिनाना । फिर गाँठ खोलकर रस्सी छुड़ा ली खंभे सेऔर घोड़े पर चढ़कर उसने एड़ दी उसे ।

घोड़ा चुपचाप अंधेरे में वसंत को लेकर आगे बढ़ा । एक घंटा सफ़र करके वसंत

सुधारा नदी के किनारे पहुँचा । घोड़े को वहीं छोड़कर वसंत नदी पार करने लगा तैरते हुए जहाँ प्रवाह का वेग कम था और पानी उथला भी था । एक घंटा तैरकर नदी के दूसरे किनारे रहे अमृतपुरी में कदम रखा उसने ।

अमृतपुरी था एक छोटा सा शहर । उसकी जनता थी बड़ी शांतिप्रेमी । लोग उस वक़्त आराम से सो रहे थे । वसंत सीधे पहुँचा मंत्री के महल को और दरबान से कहा कि मंत्री से ज़रूरी बात करनी है फौरन । उस वक़्त मंत्री जागा हुआ था, इस लिए वसंत की बातें भीतर से उसने सुन लीं । उस के स्वर में जो घबड़ाहट थी, वह भी पहचान ली मंत्री ने । दरबान से कहा कि वसंत को भेज दिया जाय । इस पर बेरोकटोक वसंत चला आया मंत्री के पास ।

फिर उसने मंत्री से वीरसिंह की प्रणाली के बारे में कह दिया । इस पर मंत्री हो गया सावधान । तुरंत अपने सिपहसालार को बुलवाया । फिर दोनों मिलकर राजा के पास चल दिये ।

अस्वस्थ रहे सत्यसेन ने मंत्री के मुंह वीरसिंह के हमले के बारे में सुन ली ख़बर । वह तिलमिलाकर दुख से कहने लगा, "मेरे बेटी और दामाद हो गये थे मुझ से दूर । अब लगता है कि यह राज भी चला जाएगा दुश्मनों के कब्ज़े में ।"

इस पर सिपहसालार ने कहा राजा सत्यसेन से, "प्रभु, जब तक रहेगा मेरे बदन में खून का आख़िरी छींटा, मैं राज्य की रक्षा करूँगा ।"

इस पर राजा ने कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारी राजभक्ति है कैसी । मगर सुमेध की सेना से तुलना करें तो हमारी सेना छोटी और दुर्बल है । तुम जाओ नदी के किनारे और कर लो शत्रु के आते ही उन से सुलह । समझौता हो जाए तो बेकार खूनखराबा रुक जाएगा । हम उन्हें महसूल भी दिया करेंगे, यह तुम लोग बता दो उस से ।"

मंत्री तथा सिपहसालार थोड़ी देर रहे चुप । फिर मंत्री ने कहा, "प्रभु, आप की आज्ञा का पालन करेंगे । मुझे भी लगता है कि फ़िलहाल यही होगा बेहतर । मगर, हमारी प्रस्तावना यदि वे पसंद नहीं करें तो लड़ाई हो जाएगी ज़रूरी, है न प्रभु?"

RAZI

राजा चुप रहा, कुछ बोल नहीं सका। सभी के दिल हो गये थे बोझिल।

योजना के अनुसार उस रात को वीरसिंह की सेनाएँ सुधारा नदी के किनारे पहुँचे। हथियारों को नावों में चढ़ा दिया गया। फिर कुछ सरदार भी नावों में चढ़ने लगे। उस के बाद कपालकंठ ने बचे सिपाहियों से कहा यूँ। "अब तुम लोग सब उतर जाओ नदी में और तैरकर आ जाओ उस पार!"

पास में रहा वीरसिंह, कपालकंठ की तरफ़ देखकर मन ही मन हुआ ख़ुश और बैठा खुद भी एक नाव में। नावों का बेड़ा निकला और नदी को पार करने लगा।

नदी के उस पार अमृतपुरी की सेनाएँ दिखाई पड़ीं। वीरसिंह आ जाए तो उस से बातचीत करके समझौता कर लेने तैयार था अमृतपुरी का मंत्री।

उस वक़्त अचानक आया नदी में बाढ़, चूँकि उस रात पहाड़ों में कहीं ज़ोरदार बारिश हुयी होगी। उस भयानक बाढ़ से सुधारा नदी का पानी बढ़ने लगा क्षण प्रति क्षण। बहाव ने तेज़ पकड़ लिया। वीरसिंह के सिपाही-सरदार चीखने-चिल्लाने लगे। उन की चीख-पुकारों से भर गया था आसपास और उनकी नावें प्रवाह की तीक्षणता के साथ बहती जाने लगीं। नावें उलट गईं। सिपाही पानी में डर और दहशत से तैरने लगे। हर एक की अपनी जान थी प्यारी। खुद की हिफ़ाजत में लगा था हर एक। इस आफ़त से कितने सिपाही बचे और कितने सिपाहियों ने खो दीं जानें, इस का पत नहीं लगा। वीरसिंह और कपालकंठ इस आफ़त से बच गये थे बाल बाल। थोड़ी देर बाद फिर वहाँ प्रशांत वातावरण फैल गया था।

इस हठात परिणाम के बारे में सुनकर अमृतपुरी का राजा सत्यसेन बहुत ख़ुश हुआ। उस ने कहा, "इस आफ़त से हमारी हिफ़ाजत की भगवान ने ही। फिर भी, आगे हमें किसी भी प्रकार के हमले का सामना करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए!"

इस पर मंत्री ने कहा, "हाँ, प्रभु! इंतजाम कर दूँगा इसका।" (क्रमशः)

गुलामी की बेड़ियाँ

हठ न छोड़ा विक्रम ने, फिर चल दिया उस पेड़ के पास । लाश को उतारा पेड़ से और डाल लिया कंधे पर । फिर हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की तरफ़ चलने लगा । तब लाश में रहा बैताल कहने लगा विक्रम से, "राजन्, आधी रात को इस बीभत्स और भयानक श्मशान में तुम यूं तकलीफ़ उठा रहे हो तो देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हो रहा है । हाँ, एक शक भी हो रहा है कि ज़रूर राज के कामकाज किसी के भरोसे पर छोड़कर तुम यहाँ आये हो । जिस पर तुमने विश्वास रखकर राज का पालन छोड़ा, वह तुम्हारी आशाओं पर पानी फेर दे तो? तानाशाह और घूसखोर बनकर तुम्हारी गैरहाज़िरी में वह लोगों को सताता रहे तो? उसे सख्त सजा दे पाओगे तुम? बहुत वक़्त पहले एक राजा को ऐसी ही समस्या का सामना करना पड़ा । उस राजा का नाम था विश्वजित । उस वक़्त उस राजा ने कैसा

बरताव किया था, यह मैं बताऊँगा तुम्हें । सुनते हुए चलना ताकि थकान महसूस न हो ।" फिर बैताल सुनाने लगा एक कहानी यूँ विक्रम को ।

बात थी पुरानी । एक था राजा शत्रुजित । विशालपुर देश पर था उसका शासन । राजा शत्रुजित सचमुच प्रजा की भलाई चाहता था । उस में राज्यकांक्षा जरा भी नहीं थी । उसने अपने राज को सौ भागों में बांटा । एक-एक भाग पर एक-एक पदाधिकारी को तैनात किया । उन अधिकारियों को पूरी आज़ादी थी ।

इंसाफ़ के लिए कोई भी राजा शत्रुजित से मिल सकता था । छोटे-बड़े या दिन-रात का भेदभाव नहीं रहता था ऐसे अवसरों पर । ऐसा प्रबंध करवाया था राजा ने । मगर फ़रियाद करने कोई अरसे से आया नहीं था । कोई न रहा फ़रियादी, इसलिए शत्रुजित ने समझा कि अपने पालन में किसी को तकलीफ़ नहीं थी ज़रा भी और सुखी थे सभी लोग ।

इस तरह कुछ साल गुज़र गये । एक बार शरदिज नामक आदमी राजा के पास आया । और सुनायी अपनी फ़रियाद यूं, "प्रभु, आप ने राज को सौ टुकडों में बांटा था । उन पर सौ पदाधिकारियों को तैनात किया था । कर वसूल करके वे आप को सही-सही दे रहे थे और आप समझने लगे कि सब कुछ चल रहा है ठीक ठीक । लेकिन यह बात सच नहीं है । वाक़ई लोग सुखचैन से दिन नहीं गुज़ार रहे हैं । ये पदाधिकारी बन गये एकदम बेईमान और भ्रष्टाचारी । बन गये तानाशाह और बेरहम । करने लगे मनमानी से कई अत्याचार । कोई उनके सामने जाकर न्याय की मांग नहीं कर सकता । सवाल करनेवाले को देते हैं कई तकलीफ़ें और उसकी तबाही देखने तक ये ख़ुदगरज़ पदाधिकारी राहत की सांस नहीं लेते ।"

ये बातें सुनकर चौंक पड़ा शत्रुजित और पूछा शरदिज से, "तुम्हारे साथ कौन सा अत्याचार हुआ?"

"प्रभु, मैं जिस राज-भाग में रहता हूँ, उसका पदाधिकारी है वीरसिंह । वह एक नंबर का घूसखोर है । उसे चंद रुपये रिश्वत देकर कोई भी नालायक़ अच्छी-ख़ासी नौकरी पा सकता है । ऐसे बहुत से नये-नये करों की

ईजाद की थी उसने, जिन के नाम भी आप नहीं जानते । ईद-त्यौहार पर लोगों को नज़राने ले जाकर उसे देना पड़ता है । ऐसा एक नया कानून बना दिया था उसने ।" शरदिज ने कहा ।

"अच्छा, पहले यह बताओ कि तुम्हारे साथ कौन सा अत्याचार हुआ ।" राजा शत्रुजित ने पूछा ।

"प्रभु, भ्रष्टाचारियों को रंगे हाथ पकड़ने का काम वीरसिंह ने मुझे सौंप था । वैसे ही कई बेईमान बेवफ़ादार बने भ्रष्टाचारियों को मैं ने पकड़ा था । मगर वीरसिंह ने हर वक़्त उन की तरफ़दारी करके, उन्हें छोड़ दिया । मुझे डांट-डपट सुनायी । इसलिए सभी भ्रष्टाचारी—नमकहराम मेरी हँसी उड़ा रहे हैं । भ्रष्टाचार दिन-ब-दिन यूं बढ़ता जा रहा था । यह सब देखकर उल्लू बने रहना मेरे बस का काम नहीं लगा । इन की पोल खोलनी चाही मैंने । इन भ्रष्टाचारियों के बारे में मैं लोगों से कहने लगा । नतीजे में मुझे नौकरी से हाथ धोना पड़ा ।" शरदिज ने कहा ।

"तुम्हें अपनी नौकरी फिर से दिलाऊँ?" राजा ने पूछा ।

"नहीं प्रभु । व्यापार करने की सूझ-बूझ है मुझे में । शिक्षक बनकर बच्चों को पढ़ाऊँ तो भी मेरा गुज़ारा हो जाता है । कुछ न कुछ काम करते हुए मैं राजधानी में आराम से जीना चाहता हूँ । नौकरी की चाह अब मुझ में नहीं रही । एक बार आप खुद जाएँ और देख लें कि वीरसिंह का शासन कैसा रहा । यही बताने के लिए मैं आप के पास आया ।" शरदिज ने कहा ।

राजा ने कहा कि ज़रूर खुद जाएगा यह सब देखने वीरसिंह के पास । तब शरदिज वहाँ से चला गया । अगले दिन ही शत्रुजित चल दिया वीरसिंह के पास ।

वीरसिंह बड़ी अदब के साथ राजा का आदर-सत्कार करने लगा । तब शत्रुजित ने कहा, "देखो, वीरसिंह, मैं इन के वास्ते नहीं आया । मैं थोड़े दिन यहीं रहूँगा । लोगों के सुख-दुख के बारे में खुद मैं पूछताछ करना चाहता हूँ । इस की अपने राज्य में घोषणा करवा दो ।"

उसी प्रकार घोषणा हुयी । राजा को देखने

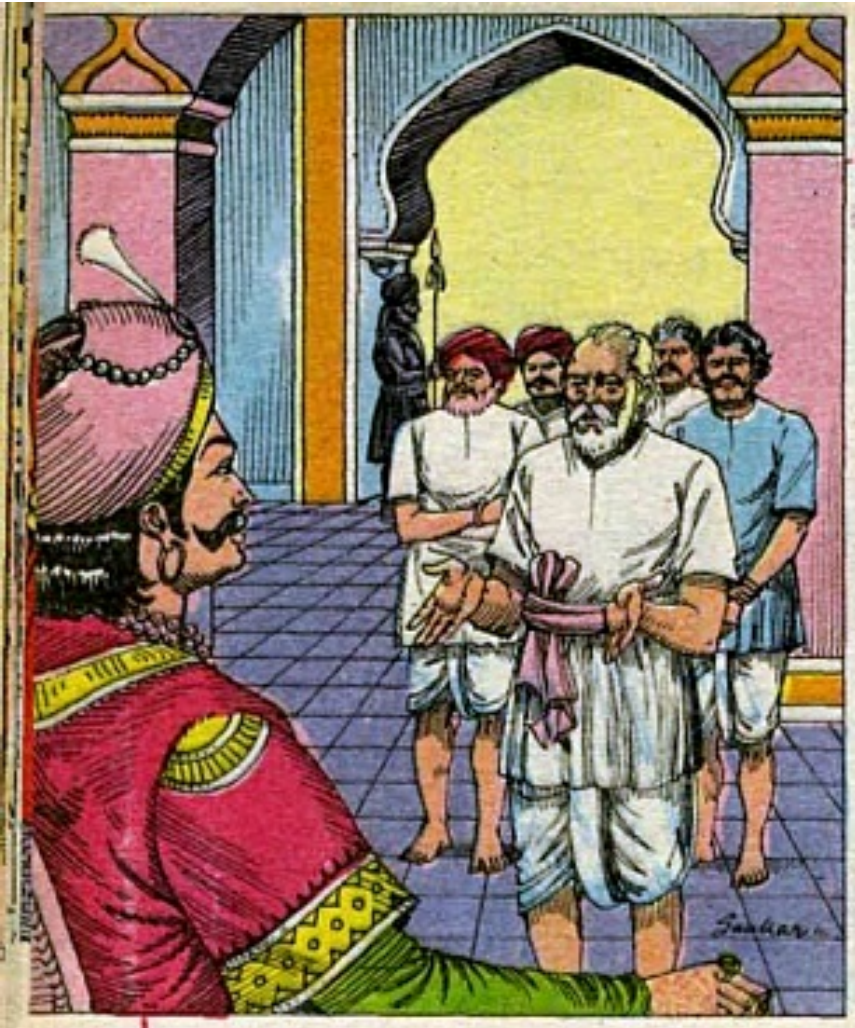

के लिए कई लोग आने लगे । एक किसान ने राजा से कहा, "महाराज, मैं दस एकड़ ज़मीन में खेती कर रहा हूँ । मामूली कर के अतिरिक्त, वीरसिंह ने हर साल मुझ से बीस बोरे धान ज्यादा लिया । इस तरह दस साल गुज़र गये । मुझे दो सौ बोरे धान वापस दिलाने की कृपा कीजिए ।"

एक लड़की के बाप ने राजा से कहा, "प्रभु, मेरी लड़की के लिए अच्छा रिश्ता आया । दहेज में जब मैंने एक हज़ार रुपये दिये तो वीरसिंह ने मुझे धमकी दी कि दहेज देने के अपराध पर मुझे कैद काटनी पड़ेगी । फिर उसी ने कहा कि पाँच सौ रुपये दूँ तो बला टल जाएगी । बिना दहेज के, वीरसिंह को भी खासी रकम देनी पड़ती है, वरना लड़कियों के बाप मुसीबत के मारे हो जाते हैं । आप ही कोई चारा-साज़ी दीजिए, हमें इन मुसीबतों से बचाइए महाराज!"

एक लड़के के बाप ने कहा, "महाराज, मैं ने अपने बेटे की शादी बिना दहेज लिये रचाना चाहता था । मगर मुझे ऐसे करने नहीं दिया वीरसिंह ने । दहेज लेने के लिए मुझ पर दबाव डाला उसने और दहेज की रकम से आधा उसने मुझ से जब्रन ले लिया ।"

व्यापारी बारी बारी से वीरसिंह को बड़ी बड़ी रकमें दे रहे थे । अकसर वीरसिंह खुद बड़े बड़े व्यापारियों से मोटी रकमें मांगकर ले लेता था । कलाकार भी मुफ़्त में वीरसिंह को, नाच-गान या खेल-करतब से मनोरंजन दे रहे थे । जहाँ देखें वहाँ अत्याचार ही अत्याचार था । चारों ओर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार फैला था ।

राजा शत्रुजित का सिर चकरा गया यह सब सुनने के बाद । उसने तुरंत कुछ कर्मचारियों को बुलाकर पूछा, "तुम लोगों को वीरसिंह ने नौकरी दी, परंतु तुम लोग वेतन में जो पैसा ले रहे हो वह तो प्रजा-धन है । तुम लोगों ने प्रजा के प्रति न्याय नहीं किया । यहाँ जो अन्धाधुन्ध और धींगाधींगी चल रही थी, इसके बारे में मुझे इत्तला न देकर तुम लोगों ने अच्छा नहीं किया । तुम लोग अपनी सफ़ाई में क्या कहना चाहते हो?"

थोड़ी देर सिर झुकाये वे चुप रहे । फिर यूँ कहने लगे, "महाराज, आपने वीरसिंह को

सर्वाधिकारी बना दिया था । इस के बलबूते पर वह कुछ भी करे, कोई उसे रोक नहीं सकता । उसकी बात न मानने की वजह से शरदिज नामक राजकर्मचारी को नौकरी से हाथ धोना पड़ा । इस राज-भाग को ही छोड़कर जाना पड़ा उसे । वास्तव में उतना धैर्य और साहस हम में नहीं रहे, इसीलिए हम कुछ भी कर नहीं सके ।"

शत्रुजित ने सर्वाधिकारी वीरसिंह को बुलाया । खुद ने जो-जो फ़रियादें सुनीं, उन के बारे में परिचय देकर राजा ने पूछा उस से, "अब कहो, क्या सफ़ाई देना चाहते हो?"

"जब सारी जनता मेरे प्रतिकूल कहने लगी तो मैं कैसे इनकार कर सकता महाराज? मुझे एक साल की मीयाद दीजिए, मैं अपने आप को सुधार लूंगा । दुरुस्त हो जाऊँगा ।" वीरसिंह ने कहा ।

सब ने राजा से विनती की कि इस तरह वीरसिंह को मुद्दत देना भला नहीं होगा । फिर भी उन की अनसुनी करके राजा शत्रुजित ने वीरसिंह को एक साल की मीयाद दी, फिर वापस चल दिया ।

इस साल भर की मुद्दत का वीरसिंह ने साफ-साफ दुरुपयोग किया, जरा भी सुधरने की कोशिश नहीं की । जिन लोगों ने अपने ऊपर फ़र्याद की, उन सब पर बुरी तरह इंतकाम लिया था उस ने । इस पर लोगों में बड़ा हल्ला-गुल्ला मचा । लोगों ने विद्रोह किया । कुछ लोगों को अपने नेता बनाकर, राजा शत्रुजित के पास भेजा । जननायकों ने राजा से प्रजा की इच्छा यूँ बतायी, "हमें एक श्रेष्ठ सर्वाधिकारी चाहिए । तुरंत ऐसे बेहतर व्यक्ति को सर्वाधिकारी बनाकर भेजिए । वैसे ही, ढीठ-भ्रष्ट वीरसिंह को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाइए ।"

राजा शत्रुजित ने वीरसिंह को कोई कठिन दण्ड नहीं दिलवाया, सिर्फ उसे पद से हटा दिया । फिर उस जगह शरदिज को नया सर्वाधिकारी बनाकर भेजा ।

बैताल ने कहानी समाप्त करके विक्रम से पूछा, "राजन्, शत्रुजित ने वीरसिंह पर कार्यवाही के रूप में जो कुछ किया था, वह क्या तुम्हें असंगत नहीं लगता? शरदिज की फ़रियाद पर हक़ीक़त जानने के लिए राजा शत्रुजित चल दिया । वहाँ वीरसिंह पर एक

नहीं, अनेक अभियोग सुनने को मिले । कई लोगों ने वीरसिंह के अत्याचारों के बारे में राजा को अनेक बातें सुनायीं । फिर भी राजा ने वीरसिंह को एक साल की मीयाद दी । क्या राजा शत्रुजित यह बात नहीं जानता कि ऐसा करने से वीसिंह फ़रियादियों पर बदला लेगा? आख़िर, वीरसिंह को सिर्फ पद से हटाकर राजा शत्रुजित चुप रहा । उसने वीरसिंह को कड़ी सज़ा क्यों नहीं दी? इन सवालों के जवाब जानकर भी यदि तुम नहीं बताओगे तो तुम्हारा सिर फट जाएगा कई टुकड़ों में । अपना जवाब दो राजन्!"

इस पर विक्रम ने कहा, "शत्रुजित ने जो कुछ किया था, उसमें असंगत कुछ भी नहीं रहा । शरदिज ने राजा से फ़रियाद किया था सिर्फ जनता की भलाई के लिए । इस में उस की अपनी भलाई जरा भी नहीं रही । इसीलिए राजा उस की बात पर वीरसिंह का पालन देखने के लिए चल दिया था । लोगों ने सिर्फ अपनी-अपनी तकलीफ़ें राजा को सुनायीं । राजा उन के पास आया तो ही उन लोगों ने मुँह खेले । तब तक तकलीफें भोगते ही रहे । उनकी भलाई के लिए शरदिज ने कोशिश की थी, मगर उन्हीं लोगों ने उसे मदद नहीं दी । इससे राजा को पता चला कि वे सब बुजदिल और कायर हैं । मौकापरस्त हैं । इसी लिए, राजा ने सोचा कि जनता में चेतना आनी चाहिए । तभी उसने वीरसिंह को एक वर्ष और मीयाद दी । उसके बाद जो कुछ हुआ, राजा शत्रुजित के अंदाज़े के अनुसार हुआ । गुलामी की बेड़ियाँ, कोई बाहर से आकर तोड़ेगा—यूं समझना ग़लत है । इन बड़ियों को तोड़ने की कोशिश खुद गुलामों को करनी पड़ती है । यह राज़ जनता ने देर से जाना । जनता की बुज़दिली और कायरता ने वीरसिंह को दुष्ट बना दिया था । ऐसे व्यक्ति को पद से हटा देना ही बड़ा दण्ड है । प्रजाद्वेष का भागी बना वीरसिंह पद से हटकर मृत सांप सा रह जाएगा ।"

राजा विक्रम का इस तरह जब मौनभंग हुआ, बैताल लाश के साथ ग़ायब हुआ और पेड़ पर चढ़ा । (कल्पित)

तोते के बोले

एक थी बूढ़ी । उसके पास रुपया-पैसा काफ़ी था । उसके अपना कोई नहीं था सिवाय एक पोती के । फिर भी बुढ़िया उसे लाड़-प्यार नहीं देती । नियम-कायदे से उसे पालती थी । खेलने-कूदने पोती को जाने नहीं देती । बाहर से किसी को पोती से खेलने आने नहीं देती । बूढ़ी को देख बिचारी पोती डर सहम जाती, बन जाती भीगी बिल्ली ।

पोती को घर लगता था क़ैद । पूरे घर में बूढ़ी और एक तोता ही देख पाती वह नन्ही जान, ऊब जाती । बाहर बच्चों को खेलते-कूदते और मौज-मस्ती से किलकारियाँ करते जब देखती, पोती को बूढ़ी पर आ जाता बेकस गुस्सा बहुत । मगर बिचारी, बूढ़ी से डरती थी बहुत । इस लिए बूढ़ी के सामने पोती अंगूठा चूमती सी रह जाती थी गुपचुप । लेकिन जब बूढ़ी जाती घर से बाहर कहीं, पोती में आ जाती उफान बड़ी । गुस्से में हो जाती आपे से बाहर और कह देती कड़ी आवाज़ में—"काश! यह बूढ़ी मरती झटपट!"

यूं अकसर पोती कहती थी बूढ़ी की गैरहाज़िरी में । तभी जाकर उतरता था उस का गुस्सा । घर के तोते ने पोती के ये बोल सुनसुनकर अच्छी तरह सीख लिये । एक दिन बूढ़ी के सामने ही तोते ने कह दिया, "काश! यह बूढ़ी मरती झटपट!"

तोते के ये बोल सुनकर बूढ़ी ने आँखें टेढ़ी कर लीं । तोते को ये बोल सिखाये किसने? सोचा बहुत । अपनी पोती पर ज़रा भी नहीं था शक । चूँकि बूढ़ी के सामने उस की पोती चूँ तक नहीं करती ।

बहुत सोचा इस बात पर बूढ़ी ने । मगर समझ में नहीं आया कि तोते को ये बोल सिखाये किस ने । लाचार होकर, मन

मसोसकर बूढ़ी हो गयी चुप । कर भी क्या सकती?

एक दिन बूढ़ी के पास आयी पड़ोस की एक और बूढ़ी । दोनों बूढ़ियाँ करने लगीं बातें कई-कई । वहीं पिंजरे में था तोता । उसे भी इच्छा हुयी बात करने की । इस पर तोता बोला, "काश! यह बूढ़ी मरती झटपट!"

ये बोल सुनते ही फक पड़ा चेहरा बूढ़ी का । उसके मुंह से निकला नहीं एक भी बोल । बोलती बीचोंबीच हुयी बंद उस की । वह बूढ़ी तुरंत कुछ भी बताये बिना चली गयी वहाँ से । यह अपमान सा लगा बूढ़ी को । तोते के बोल सुधारने के बारे में बूढ़ी ने सोचा ।

उसी गली में रामशास्त्री नामक पंडित था । पंडित के घर में भी था एक तोता । बूढ़ी ने सोचा, तोतों के बारे में पंडित अच्छी जानकारी रखता होगा ।

उसी दिन बूढ़ी चल दी पंडित के घर और बोली, "शास्त्रीजी, हमारे तोते के बोल अच्छे नहीं रहे । कोई घर आये, तोता बुरा बोले—यह अच्छा नहीं लगता । तोता अच्छे बोल सीखे, इस का कोई उपाय बताइए न!"

इस पर हँसकर पंडित बोला, "यह बड़ा आसान काम है । हमारा तोता अच्छी-अच्छी बातें बोलता है । एक भी बुरी बात नहीं जानता । हमारा तोता तीन-चार दिन तुम्हारे तोते के साथ रहता तो उसे भी थोड़े अच्छे बोल आ जायेंगे । इसे ले जाकर थोड़े दिन अपने तोते के पिंजरे में रख लेना ।"

बूढ़ी ने फ़क्ट किया आभार । पंडित का तोता लेकर घर वापस आयी । अपने तोते के पिंजरे में डाल दिया पंडित के तोते को । तब जाकर उसने आराम की सांस ली ।

तभी नये तोते को देखकर बूढ़ी के तोते ने आँखें झपकायीं । फिर बोला यूं, "काश! यह बूढ़ी मरती झटपट!"

तुरंत पंडित के तोते ने कहा, "तथास्तु!"

बूढ़ी गुस्से के मारे हुयी लाल-पीली और उस बदहवासी में उसने खोल दिया पिंजरा । तोते उड़-उड़के जाने लगे तो बूढ़ी ने कहा, "जा मर कहीं और जगह निगोड़े कहीं के!"

हमारा ज्ञान भंडार

वह कौन था?

बात है गुज़रे ज़माने की । उन दिनों बड़ी खूबसूरत-प्यारी राजनर्तकी एक रहती थी मधुरा नगर में । नगर के बड़े बड़े सेठ-रईस उस के घर आते थे, उस के नाच-गान पर फ़िदा हो जाते थे ।

एक बार वह राजनर्तकी इमारत के छज्जे पर खड़ी थी । उसी वक़्त रास्ते के किनारे एक युवा भिक्षु किसी से बात करता हुआ ठीक राजनर्तकी के महल के सामने खड़ा रहा । उस नर्तकी की नज़र युवा भिक्षु पर पड़ी । भिक्षु का रंग-रूप, बोलने का रंग-ढंग नर्तकी को बहुत पसंद आया ।

उस रात को वही युवा भिक्षु उस नर्तकी के महल के बाहर एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था । नर्तकी ने उसे देख लिया । फिर अपनी परिचारिका को भेजा उस भिक्षु को अपने यहाँ बुलवाने । उस नर्तकी की बात युवा भिक्षु को पहुँचायी थी उस परिचारिका ने । तब उस भिक्षु ने ख़बर भेजी उसी परिचारिका से नर्तकी को यूँ, "ज़रूर आऊँगा । लेकिन इतनी ज़ल्दी नहीं । अभी इस का वक़्त नहीं आया ।"

इस घटना के बाद काफी वक़्त गुज़रा । उस नर्तकी पर चोरी का इलज़ाम लगाया गया और दोनों हाथ कटवाकर, उसे उस नगर से निकाल दिया गया ।दुख-दर्द के बोझ से दबी वह नर्तकी उस वक़्त थी बेकल और बेकस । युवा भिक्षु उस हालत में उस के बारे में पूछपाछ करते हुए उस के पास पहुँचा । वास्तव में था वह वक़्त नर्तकी के जीवन का आख़िरी दौर । युवा भिक्षु ने उस वक़्त उस दुखियारिन का सिर अपनी गोद में लेते हुए कहा, "तुम्हारे पास आने का यही सही वक़्त है मेरे लिए ।" फिर उस युवा भिक्षु ने अपने अमृत वचनों से उसे सांत्वना दी, उस के मन को शांति पहुँचाई । इस पर उस नर्तकी ने शांति के साथ जान छोड़ दी ।

याद कीजिए अब! इस प्रसिद्ध कथा का वह युवा भिक्षुक था कौन? वह नर्तकी थी कौन?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)

आप की जानकारी है कितनी?

१. ईसा के पूर्व चौथी शती में एक विदेशी ने भारत की यात्रा की और उस दौरान जो जो अनुभव मिले, वे सब एक पुस्तक में उस ने लिख दिये । कौन था वह विदेशी?

२. सम्राट अशोक का संदेशी जब श्रीलंका पहुँचा था, तब वहाँ किसका शासन था?

३. वह संदेशी था कौन? किस वर्ष में वह वहाँ पहुँचा?

४. उस संदेशी के बाद जो दूसरा संदेशी उस द्वीप में पहुँचा, उस का क्या नाम था?

५. दूसरा संदेशी अपने साथ जो अमूल्य उपहार वहाँ ले गया था, वह क्या था?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)

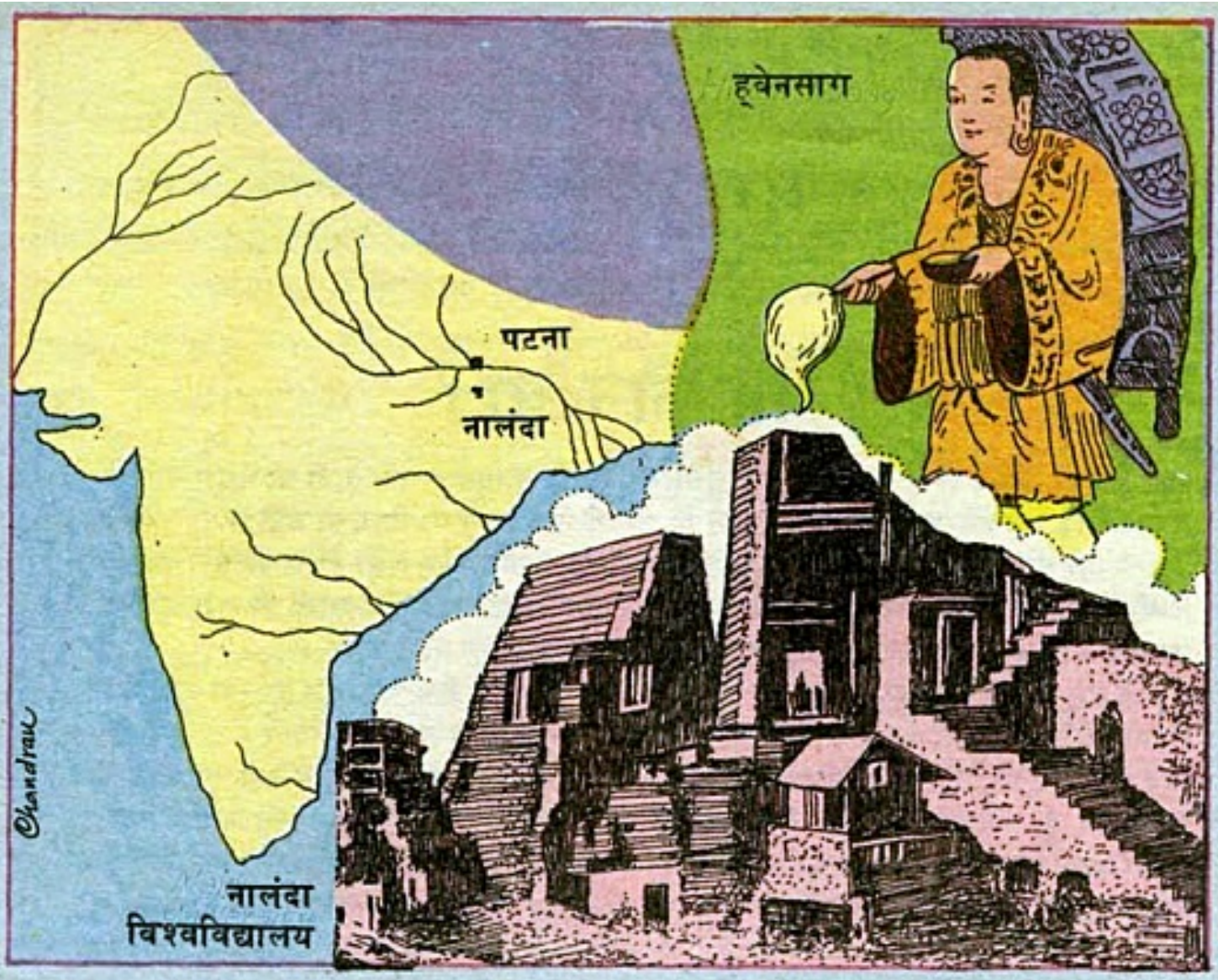

भारतः अतीत–आज

नालंदा विश्वविद्यालय

तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय बहुत पुराने हैं जिन की वजह से हमारे देश का बड़ा नाम हुआ सारे संसार में । आज के बिहार राज्य में पटना से दक्षिणी दिशा में नब्बे कि.मी. की दूरी पर एक गाँव है बड़गाँव, जहाँ प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर आज भी देखने को मिलते हैं ।

इसी जगह सिद्धार्थ ने अहिंसा के उसूलों का काफी देर तक प्रचार किया था, जिस से इस प्रदेश को बड़ा पवित्र माना जाता है । सम्राट अशोक ने यहाँ स्मारक बौद्धस्तूप एक बनवाया था । महावीर भी कुछ समय यहाँ रह चुके थे । दस हजार विद्यार्थियों को जगह देने वाले इस महान विश्वविद्यालय का किसने निर्माण किया था, इस का हमें आज तक पता नहीं चला ।

सुप्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस विश्वविद्यालय को ई.पू. सातवीं शती में देखा था, वहाँ के छात्रों की अनुशासनप्रियता और ज्ञान के प्रति जिज्ञासा की प्रशंसा करते हुए ये सारी बातें उस चीनी यात्री ने अपनी पुस्तक में लिख दीं । ह्वेनसांग ने लिखा कि पांचवीं शती में गुप्त वंश के सम्राट नरसिंह गुप्त बालादित्य ने नालंदा में एक सुंदर मंदिर का निर्माण करवाया था और उस मंदिर में ८० फुट ऊँची बुद्ध भगवान की विराट मूर्ति एक प्रतिष्ठापित करवाई थी । जिस समय ह्वेनसांग नालंदा देखने गया, उस वक़्त उस विश्वविद्यालय का कुलपति था शिलाभद्र नामक महान पंडित ।

तिब्बत, चीन, इंडोनेशिया द्वीपों से और ख़ासकर जावा जैसे सुदूर प्रांतों से विद्या पाने के लिए अनेक छात्र उन दिनों नालंदा आया करते थे ।

इस विश्वविद्यालय की ख़ास बात थी यहाँ का पुस्तकालय जो तीन भवनों में फैला रहता था और इन में प्रत्येक भवन की नौ मंज़िलें होती थीं । कहा जाता था कि उन दिनों ज़्यादा से ज्यादा पुस्तकें वहीं मिलती थीं ।

पता नहीं चलता कि इतना महान विश्वविद्यालय कैसे हो गया था लुप्त । कुछ प्रमाण हैं इस के कि भयानक आग की लपेट में आकर यह विश्वविद्यालय हो चुका था नष्ट । भला, इस आग के प्रकोप का क्या कारण होगा? हो सकता है, विदेशी आक्रामकों ने साज़िश के सहारे कर दिया हो यह सब ।

आज नालंदा इस तरह खंडहरों में बंद था और अपने अतीत के बारे में याद दिला रहा था । इन खंडहरों के बीच एक बड़ा बौद्धस्तूप खाड़ा था बड़ा गंभीर, जिस के पीछे फैले हुए थे राजगीर के पहाड़ ।

साइकिल की कहानी

साइकिल और कार में से आप ज़्यादा किसे पसंद करेंगे? वैसे तो सब कार ही पसंद करते हैं । मगर साइकिल की अपनी ख़ासियत है । बुज़ुर्ग कहते हैं कि कम दूरी का करना हो यदि सफ़र तो है साइकिल ही बेहतर । फ़िलहाल समूचे संसार में हैं ८० करोड़ साइकिलें । और इन की मांग बढ़ रही है दिन प्रति दिन । साइकिल पर कीजिए सफ़र, शरीर के लिए मिल जाता है अच्छा-ख़ासा व्यायाम । पर्यावरण प्रदूषण की नहीं है गुंजाइश । हाँ, ट्रॉफिक का सरदर्द नहीं आता सामने । इस लिए जाना है यदि कम दूर तो साइकिल पर जाना ही होगा बेहतर, चूँकि पहुँच सकते हैं जल्दी भी ।

चन्दामामा की ख़बरें

प्रचुर होता देहाती इलाज

आज भी गाँवों-देहातों में इलाज होता है जड़ी-बूटियों और पत्तों के रस से । ऐसे इन देहाती इलाजों की ओर आज बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा शोध संस्थानों का ध्यान जा रहा है । आधुनिक चिकित्सा इन दिनों काफी खर्च की निकल रही है जो आम जनता की पहुँच के बाहर रही । चिकित्सा शास्त्र के विशेषज्ञ आज इस विचार पर आ रहे हैं कि इतने दिनों से देहाती इलाज के प्रति निरपेक्ष रहे थे वे, पर यह बात सच है कि अनेक संदर्भों में देहाती इलाज अचूक है ।

कुछ सवाल साहित्य के

१. भारत के पुराने राजवंशों का विवरण किस पुराण में मिलता है?

२. 'सारे जहाँ से अच्छा' गीत किसने लिखा था?

३. भारत के एक राजनीतिज्ञ ने रामायण और महाभारत को सुगम भाषा में, संक्षिप्त रूप देकर लिखा था । वह कौन था?

४. अंक गणित और बीज गणित पर लिखी गई पुरानी पुस्तक का क्या शीर्षक था? उसका लेखक कौन था?

५. अंग्रेजी भाषा में कितने शब्द हैं?

उत्तर

वह कौन था?

उपगुप्त; वासवदत्ता ।

आपकी जानकारी है कितनी?

१. ग्रीस देशवासी मेगस्तनीस ।

२. देवानांप्रिय तिस्सा नामक राजा का ।

३. आशोक का पुत्र महेन्द्र; ई.पू. २५१ में ।

४. अशोक की पुत्री संघमित्रा ।

५. बोधिवृक्ष की कलम ।

कुछ सवाल साहित्य के

१. मत्स्यपुराण ।

२. मोहम्मद इक़बाल ।

३. सी. राजगोपालाचारी ।

४. लीलावती गणित।

५. क़रीब ३,००,००० शब्द ।

तीन परीक्षाएँ

(गतांक से आगे)

रात भर सफ़र करके कृष्णवर्मा दूसरे दिन दोपहर तक कौमुदी देश के पूरब में रहे जंगल में पहुँचा । उस जंगल में एक जगह खूब फैला बड़ा सा चंदन का पेड़ उसे दिखाई पड़ा । उस पेड़ के नीचे एक शिला प्रतिमा दिखाई पड़ी लिपटे हुए दो सांपों की । कृष्णवर्मा सावधानी से परखने लगा आसपास ।

घोड़े को एक किनारे छोड़ा, म्यान से तलवार खींची और शिलाप्रतिमा की तरफ़ जाने लगा कृष्णवर्मा । तभी पीछे से एक आवाज़ यूँ सुनाई पड़ी एक चेतावनी जैसी, "रुकिये!"

कृष्णवर्मा चौंक कर पीछे मुड़ा । तभी पास की एक झाड़ी के पीछे से एक नौजवान बाहर आया । नये आये मसों से रहे उस नौजवान ने कृष्णवर्मा को नमस्कार किया, फिर उस के नज़दीक आया ।

"कौन हो तुम?" आश्चर्य के साथ कृष्णवर्मा ने पूछा ।

इस सवाल पर सिर झुकाये उस नौजवान ने कहा, "जिस की वजह से आपको यहाँ आना पड़ा, वही हूँ मैं ।"

उस उत्तर और उस को स्वर की कोमलता देखकर कृष्णवर्मा ने उसे पहचान लिया, फिर भी शक से पूछा, "राजकुमारी?"

"हाँ, मैं ही राजकुमारी ज्योत्स्ना हूँ । मंजूषा पर अंकित चित्रों के सहारे आप ठीकठाक यहाँ चले आये । इस तरह आप तीसरी परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो गये । अब चलिये ।" राजकुमारी ने कहा ।

तभी कृष्णवर्मा ने कहा, "देखिए, ज्योत्स्ना । मुझे लगता है कि इस मंजूषा पर अंकित चित्रों तथा इस जगह के पीछे कोई राज़ छिपा हुआ है । आप क्या सोचती है?"

अलका मिश्र

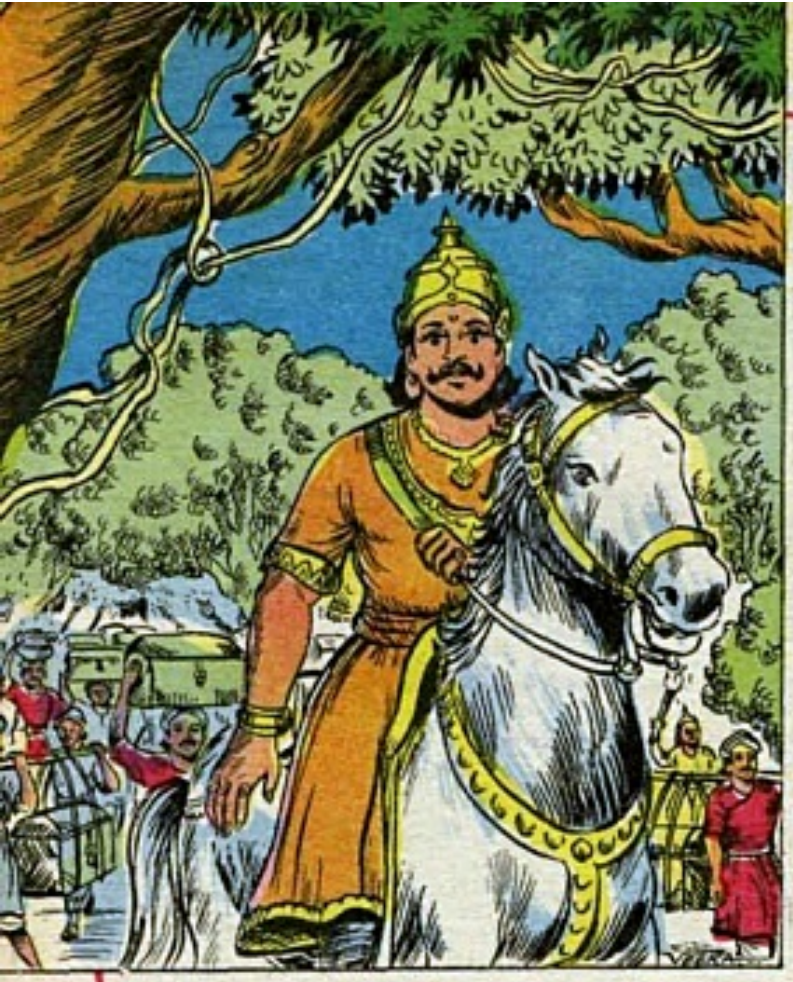

ज्योत्स्ना सोचने लगी कि इस सवाल का क्या जवाब दिया जाये । वह इस दुविधा में थी कि कृष्णवर्मा ने कोमल स्वर में कहा, "ज्योत्स्ना, आप का संदेह मैं समझ गया । आप जिस काम के बारे में सोच रही हैं, वह ख़तरों से भरा ज़रूर होगा । एक राज्य के राजा को साहसी बनाने की जगह, उसे कायर बनाने की कोशिश करना आप के लिए कहाँ तक वाजिब होगा-आप ही सोचिए ।"

इन बातों से राजकुमारी की समझ में आया कि कृष्णवर्मा वापस जानेवाला नहीं है, वह बुजदिल नहीं है । इस पर राजकुमारी ने उस से कहा, "भला, मैं क्यों ऐसी कोशिश करती?" आप यहाँ बैठिए, कुछ ज़रूरी बातें आप को बताना चाहती हूँ ।"

फिर ज्योत्स्ना एक पेड़ के नीचे बैठ गयी । और कमर में बंधे दुपट्टे के भीतर से उसने एक बहुत पुराना ताड़ का पत्ता निकाला । फिर यूँ कहा, "मैं ने आप पर विश्वास किया । आप बात से नहीं मुकरेंगे, यह मैं जानती हूँ । कई पीढ़ियों से हमारे परिवार के साथ जुड़ा हुआ एक तालपत्रग्रंथ है । उसी में से एक है यह । आपको मैं कुछ ज़रूरी बातें सुना दूंगी, ज़रा सावधानी से सुनिये ।" फिर ज्योत्स्ना कहने लगी यूँ–

"बात कुछ पुरानी है । लगभग सैकड़ों साल पुरानी । हमारे वंश का एक राजा था हैहयवर्मा । वह बड़ा ही वीर-बहादुर था । राजनीतिकुशल था । साथ ही मंत्र-तंत्र भी जानता था । कहा जाता था कि मंत्र विद्या में बेजोड़ था वह ।

दक्षिण में रहे कुछ राज्यों पर चढ़ाई करके उन्हें हरा दिया था उसने । उन्हें अपने सामंत राजा बना दिये । उन से बहुत सी धन-दौलत महसूल में वसूल कर चुका था । दुर्भाग्य से उस का पुत्र अजेयवर्मा निकला एकदम बेवकूफ़ और निरा मूर्खसम्राट । इस पर वे काफी निराश रहते थे ।

हैहयवर्मा को इस बात का डर सताने लगा कि जो धन और राज्य उस ने अनेक तकलीफ़ें उठाकर हासिल किये थे, वह सब चौपट हो जाएगा अपने पुत्र के पालन में । इस लिए अपनी सारी संपत्ति तथा मंत्र-खड्ग उसने एक जगह छिपा दिया । अपने जादूगर गुरु की सहायता से उन पर उसने जादू का पहरा रखा

था जिसे कोई नहीं जानता ।

"मगर, उस पहरे के बारे में या उस धन-संपत्ति को वापस पाने के तरीके के बारे में उसने किसी को नहीं बताया । किंतु, इन सारी बातों का परिचय देते हुए, इस तालपत्र पर उस ने यह भी लिखा यूँ, 'वह सारी संपत्ति कौमुदी देश के पूरब में छिपी रखी मैं ने । लिपटे हुए सांपोंवाली पत्थर की मूर्ति से उस जगह को पहचाना जाता है । उस अपार संपत्ति तथा मंत्रखड्ग को हासिल करने के लिए, मैंने जो तिलिस्मी पहरा रखा था, उसे हटाकर उन के पास पहुँचने के लिए मंत्र-तंत्र का ज्ञान ज़रूरी नहीं है । सिर्फ सूझबूझ और कुशाग्र बुद्धि की ज़रूरत है । साहसी, बुद्धिमान और धर्मपरस्त व्यक्ति के लिए उन्हें हासिल करना बड़ा आसान काम होगा ।' इस पत्र को हमारे वंश में सिर्फ राजा को ही पढ़ने का नियम है । देखिए ।" इतना कहकर, वह तालपत्र ज्योत्स्ना ने कृष्णवर्मा की ओर बढ़ाया ।

लेकिन कृष्णवर्मा ने उसे नहीं लिया । ज्योत्स्ना से कहा, "अच्छा, आगे का समाचार बताइए ।" इस पर राजकुमारी ने प्रशंसापूर्वक उसकी तरफ़ देखा, फिर कहने लगी यूँ–

"हमारे पूर्वज हैहयवर्मा का डर सही निकला । अजेयवर्मा तथा उस के आगे के वंशजों के पालन में ढीलापन आ गया था । इस वज़ह से सामंत राजाओं ने विद्रोह किया । अपने को आज़ाद घोषित कर लिया था । इतना ही नहीं, उन में से कुछ राजाओं ने कौमुदी राज्य के कुछ भागों पर हमला भी कर दिया, उन्हें अपने राज्यों में मिला भी लिया उन पर क़ब्ज़ा पाकर । हैहयवर्मा ने धन-संपत्ति को बड़े रहस्यमय ढ़ंग से कहीं छिपाकर रखा था । इस लिए किसी को उस की भनक नहीं पड़ी । हमारे वंश के ही दो-तीन राजाओं ने इस संपत्ति को हासिल करने की कोशिश ज़रूर की थी, परंतु कोई ख़ास फ़ायदा नहीं हुआ । इस सर्पप्रतिमा को हटाने की उन राजाओं ने कोशिश की ताकि नीचे कोई भूगर्भ मार्ग या सुरंग का पता चले । परंतु उन से यह ज़रा भी मुमकिन नहीं हुआ, इस प्रतिमा को एक इंच भी यहाँ से सरका नहीं सके ।

"मेरे पिता के बेटे नहीं थे, मैं ही अकेली संतान थी । इस लिए इस तालपत्र को पढ़ने का मौक़ा मुझे मिला । पढ़ने के बाद मैं आयी थी यहाँ, इस सर्प प्रतिमा को देख लिया । इस अकेले आधार पर ख़ज़ाना कैसे हासिल करूँ, यह मेरी समझ में नहीं आया ।

"आप की ताकत-क़ाबिलियत और सोच-समझ की गहराई देखने-परखने के बाद मुझे आप पर विश्वास जम गया । मुझे पूरा-पूरा भरोसा है कि आप यह नामुमकिन लगनेवाला काम सुगमता से कर पायेंगे । ख़ज़ाने की बात अलग, वह मंत्र-खड्ग आप को मिल जाये-यही मैं चाहती हूँ । इस लिए, जब मेरी शादी की बात एक शाही पहेली बनी, मैं ने इस समस्या को तीसरी परीक्षा में बदल दिया और उस मंजूषा पर चित्रों में उतार दिया । जब मुझे गुप्तचरों द्वारा पता चला कि आप अकेले घोड़े पर इस तरफ निकले हैं, मैंने सोचा कि आप को राज़ का पता चला है । आप अपने को किसी ख़तरे में न झोंक लें, यह देखना मैंने अपना फ़र्ज़ समझा । इसी लिए मैं आप के पीछे-पीछे आयी । ज़ादू-तिलिस्म की समस्या है यह । पता नहीं, इस में आगे जाकर कौन-कौन सी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ेगा । अब मुझे इस आख़िरी घड़ी में यह डर लग रहा है कि आप को इस तरह उकसाकर मैं आप को किसी अनजान ख़तरे में धकेल रही हूँ ।" यूं कहती हुई ज्योत्स्ना बिलकुल डरी-सहमी दिखाई पड़ी थी कृष्णवर्मा को ।

इन बातों पर कृष्णवर्मा हंस दिया हौले से । फिर वह कहने लगा यूं, "देखिए राजकुमारी! चाहे उस संपत्ति पर ज़ादू का हो पहरा, उसे हासिल करनेवाले के लिए ज़ादू-टोना का ज्ञान ज़रूरी नहीं है-यूं हैहयवर्मा ने स्पष्ट कर दिया था न? यह बात आप भूलिए मत, डरने की ज़रूरत नहीं है ज़रा भी इस में । बेवजह इस बारे में आप चिंता न करें । कोशिश करेंगे हम । हमारी सूझ-समझ और ताकत के बलबूते पर हमें मिल जाये जय, या सामना करना पड़े पराजय का, यह तो अलग बात है । चलिये ।" फिर कृष्णवर्मा उस लिपटे हुये सांपोंवाली पत्थर की मूर्ति के पास गया, बारीकी से इंच-दर-इंच उस की परीक्षा करने लगा ।

थोड़ी देर उस प्रतिमा को परखने के बाद अचानक कृष्णवर्मा ने कहा, "ज्योत्स्ना। यहाँ देखिये!" उस वक़्त उस की नज़र सांपों के जोड़े वाली प्रतिमा के ऊपरी भाग में दोनों फनों के बीच लगी हुयी थी। ज्योत्स्ना ने भी देखा। उस जगह दो इंच गोल फैलाव था जो काफी उभरा दिखाई पड़ा।

"हाँ, इस में कोई ख़ास बात ज़रूर होगी।" ज्योत्स्ना ने कहा।

"हाँ, संदेह नहीं। कोशिश करके देखें।" यूँ कहकर कृष्णवर्मा ने ज्योत्स्ना को परे हटने के लिए कहा। फिर तीर-कमान लेकर निशाना साधा, एक तीर ऐसे छोड़ा कि वह जाकर ठीक उस गुमटा सी जगह लगे। तीर जाकर ठीक उस निशाने पर लग गया।

दूसरे ही पल इतनी रोशनी वहाँ फैली कि आँखें चकाचौंध हो जायें। भयानक आवाज़ भी हुई। तिलिस्मे ढंग से लिपटे सांपों के जोड़ेवाली मूर्ति गायब हो गयी। धरती के भीतर कोई सुरंग थी। सीढ़ियाँ उन्हें साफ़-साफ़ दिखाई पडीं।

इस तरह कृष्णवर्मा की कोशिश सफल हुयी थी। पहली कोशिश की सफलता पर खुश हुये दोनों। आगे-आगे कृष्णवर्मा और पीछे-पीछे ज्योत्स्ना उस भूगर्भ की गुफा में उतरने लगे। सीढ़ियाँ उतरने के बाद उन्हें एक संकरा रास्ता दिखाई पड़ा। उस रास्ते में से गुज़रकर कृष्णवर्मा और ज्योत्स्ना एक खुले मैदान में पहुँचे।

उस मैदान के बीचों बीच एक सरोवर था। उस में हर कहीं खिले हुए स्वर्ण कमल दिखाई देने लगे। उन की चमक-दमक चारों ओर फैली हुयी थी। उन स्वर्ण कमलों के बीचों बीच एक ही एक श्वेत कमल था। उसके चारों और पत्थर का चबूतरा था। उस चबूतरे पर दो कटोरदान थे जिन पर चढ़े हुए थे ढक्कन।

यह सब देखकर ज्योत्स्ना ने कहा, "लगता है यहाँ भी कोई राज़ छिपा हुआ है!"

"हाँ, ऐसा ही लगता है। अपूर्व चीज़ें आसानी से हाथ नहीं लगती।" कहा कृष्णवर्मा ने। फिर थोड़ी देर सोचकर कहने लगा, "शायद वे स्वर्ण कमल हो सकते हैं धन-दौलत, यानी हीरे-मोतियों की राशियाँ। वह सफ़ेद कमल होगा ज़ादू की

तलवार । उन के पास पहुँचने का उपाय शायद हैहयवर्मा ने इन कटोरदानों में छुपाकर रखा होगा ।"

फिर वह सीधे उस पेड़ के पास गया । दोनों कटोरदानों के ढक्कन उठाकर देखा । एक कटोरदाने में तरह-तरह के पकवान थे स्वादिष्ट महक फैलाते हुए । दूसरे में था थोड़ा सा चावल ।

कृष्णवर्मा ने देखा उन की तरफ़, सोचा थोड़ी देर, फिर चल दिया उस पेड़ के पीछे । वहाँ दो चूल्हे, दो बरतन और दो लकड़ियाँ उसने देख लिये । इस पर उस ने ज्योत्स्ना की तरफ़ मुड़कर कहा, "देख लिया न? ख़ज़ाने के लिए जो आयेंगे, उन की बुद्धि की यह एक ख़ास परीक्षा है । नयी जगह किसी को पककर तैयार चीज़ें खानी नहीं चाहिए!" फिर चावल वाले बरतन को हाथ में लेकर वह सरोवर की तरफ़ निकलने को हुआ ।

तब ज्योत्स्ना ने हाथ उस बरतन की ओर बढ़ाते हुए कहा, "मुझे दीजिए, वह चावल धोकर लाऊँगी ।"

मगर कृष्णवर्मा ने वह काम ज्योत्स्ना को नहीं सौंपा ।

"नहीं, यह काम मैं ही करूँगा । हो सकता है, सरोवर में भी कोई रहस्य छुपा हुआ हो । आप यहीं रहिए" इतना कहकर कृष्णवर्मा ने एक और खाली बरतन भी हाथ में लिया, और सरोवर की तरफ़ निकला । सरोवर से पानी निकाला दूसरे बरतन से, फिर चावल को कोशिश की धोने की उस पानी से ।

मगर देखते-देखते पानी, चावल से छूते ही गरम होने लगा । चावल के साथ पूरा बरतन ही इतना गरम हुआ कि उसे पकड़कर रखना भी मुश्किल लगा उसे । इस हालत में कृष्णवर्मा ने बरतन छोड़ दिया सरोवर में ।

ज्यों ही बरतन सरोवर में गिरा, त्यों ही जादू का सरोवर हो गया गायब । वहाँ हीरे-मोतियों की राशियाँ दिखाई पड़ीं । ज्योत्स्ना और कृष्णवर्मा आश्चर्य तथा आनंद के साथ उन धन राशियों को देखने लगे । अचानक उन दोनों का ध्यान ज़ादू की तलवार पर गया जो वहाँ दिखाई नहीं दे रही थी । इस पर ख़ज़ाने की खोज़ वाली खुशी गायब हुयी, वे दोनों ढूँढ़ने लगे चारों ओर उस तिलिस्मी तलवार के लिए ।

बिना ज़्यादा तकलीफ़ के, उन्हें दिखाई पड़ा उन रत्न राशियों के बीच में चमकता हुआ सफ़ेद खड्ग ।

इस पर ज्योत्स्ना ने कहा, "यहाँ तक स्वर्ण कमलों को आप धनराशियों में बदलने में सफल हुए थे । पता नहीं कि अब हमें उस सफ़ेद कमल को ज़ादुई तलवार में बदलने के लिए क्या करना होगा!"

कृष्णवर्मा ने कोई उत्तर नहीं दिया । सफ़ेद कमल के पास झुका । उसे पकड़कर ज़ोर से उखाड़ा । अगले ही पल वह सफ़ेद कमल वहाँ से गायब हुआ और उस जगह एक राक्षस दिखाई पड़ा ।

तलवार की जगह जब राक्षस दिखाई देने लगा तो चौंक पड़े ज्योत्स्ना और कृष्णवर्मा । तब हंसते हुए उस राक्षस ने पूछा, "राजकुमार, ख़ज़ाना हासिल हुआ । उसे ले जाये बिना, इस तरह मुझे बुलाने का मकसद क्या मैं जान सकता हूँ?"

इस सवाल पर कृष्णवर्मा ने गंभीरता से कहा, "धन का मोह रखनेवाला राजकुमार होता यदि मैं, तो मुझे यूँ नज़र-अंदाज़ करना तुम्हारे लिए वाजिब ही होगा । मगर बात ऐसी नहीं है । मैं धन पर मरनेवाला लालची नहीं हूँ । सिर्फ मैं अपूर्व खड्ग के लिए ही आया हूँ, उसे हासिल करके ही जाऊँगा ।"

इन बातों पर राक्षस हंस दिया ठहाका मारकर और यूँ कह दिया, "चाहत और खुददारी बुरी नहीं, हैं आदमी को आगे बढ़ाने वाली । राजधर्म जाननेवाले सर्वोत्तम को ही वह तलवार मिलेगी । युद्ध के लिए काम आने वाली उस तलवार की ख़ासियत ही क्या है? ऐसा कुछ नहीं जो धन से हासिल नहीं होता हो । क्यों? ख़ज़ाने से खुश हो जाओ राजकुमार और चले जाओ उसे लेकर !"

कृष्णवर्मा हौले-हौले हँस पड़ा और कहा उसने यूँ, "तुम्हारी बात का मैं खंडन करता हूँ । मेरे जवाब में राजधर्म छुपा हुआ है, सावधानी से सुनो । तरक्की मिलती है किसी को उस के अपने अथक परिश्रम से, न कि धन-दौलत से । आदमी के लिए आवश्यक अन्न-जल भगवान ने दे दिया प्रकृति में जो हमारे चारों ओर फैली हुई थी । प्रकृति में जब यह अन्न-जल नहीं रहेगा, तब जिन के पीछे आदमी पागल बनकर यूँ दौड़ने लगता है, ऐसे

ये हीरे-मोती किसी आदमी की भूख-प्यास मिटा पायेंगे? इसलिए प्रकृति में रही मूलश्रोत की रक्षा करना, बलवान के चुंगल से दुर्बल को बचाना—यही है न राजधर्म! अपनी जनता को दुष्ट शक्तियों से बचाना राजा का धर्म होता है । इस के लिए राजा को दंड-दमन का सहारा लेना ही पड़ता है । इस लिए राजा को अपने कर्तव्य के पालन में अधिक उपयोगी होती है तलवार ही!"

कृष्णवर्मा की बातें सुनकर राक्षस अदब-आदर के साथ झुका, उसे प्रणाम करके बोला यूँ, "राजकुमार! तुम जैसे सर्वोत्तम-धर्मपरस्त व्यक्ति के लिए ही मैं इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहा हूँ । यह रहा मंत्रबद्ध अद्भुत महिमावाला अपूर्व खड्ग चन्द्रहास!" फिर हवा में हाथ फैलाकर राक्षस ने अपने हाथ में खड्ग ले लिया, उसे राजकुमार कृष्णवर्मा को दे दिया । उसने तब कृष्णवर्मा से कहा, "राजकुमार, जिस के पास यह जादू की तलवार रहेगी उसे कभी भी पराजय नहीं होगी । इस तिलिस्मी तलवार तथा इस ढेर धन-दौलत के साथ तुम अपनी जनता को सुख-चैन और शांति दिलाओ राज़कुमार!" इतना कहकर वह राक्षस अदृश्य हो गया ।

कृष्णवर्मा ने वह तलवार ज्योत्स्ना के हाथ देने आगे बढ़ाते हुए यूं कहा, "ज्योत्स्ना, आप की तीसरी परीक्षा भी हुई खतम । यह रही जादू की तलवार! अपने वंश के पूर्वज की अमानत! इसे ले लीजिए!"

मगर ज्योत्स्ना ने वह तलवार नहीं ली । मीठी-मीठी हँसी के साथ उसने कहा, "देखिए, परीक्षा में विजयी होकर हासिल की जानेवाली चीज़ पर सिर्फ विजयी प्रतियोगी का ही हक होता है । इस पर अब मेरा कोई अधिकार नहीं होगा ।"

कृष्णवर्मा भी हँस दिया । दोनों वापस राजधानी को लौट आये । राजा चन्द्रकांत ने सारी बातें अपनी बेटी के मुंह से सुनीं, बहुत खुश हुआ । एक सुमुहूर्त में कृष्णवर्मा और राजकुमारी ज्योत्स्ना का विवाह बड़े वैभव के साथ संपन्न हुआ ।

श्री जगन्नाथ की कहानी

उस रात को मौक़ा पाकर ललिता ने पिता से कह दिया कि अपना पति एक बार गुफा में रहे भगवान को देखना चाहता है ।

विश्वावसु ने गुस्से से बेटी को देखा, परंतु कुछ नहीं बोला ।

ललिता थोड़ी देर चुप रही, फिर बोली, "पिताजी, मैं आप की अकेली संतान हूँ न? जिस भगवान की आप पूजा कर रहे हैं, उसे आप के बाद कौन पूजेगा? वह दायित्व, आप के दामाद के नाते विद्यापति पर है न? ऐसी हालत में, मेरे पति को गुफा का भगवान आप दिखा दें तो ग़लती क्या है?"

"बेटी, तुम्हारा पति इस जंगल में हमारे साथ हमेशा के लिए रह जाएगा, यह हम कैसे विश्वास कर सकते? कम से कम, क्या तुम बता सकती हो कि यूँ तुम विश्वास करती हो?" विश्वावसु ने पूछा ।

"पिताजी, आप उसे अपने पुत्र की तरह मानकर प्यार से उस के साथ पेश आयें तो यहाँ रहे बिना वह जाएगा भी कहाँ?" ललिता ने कहा ।

"बेटी, तुम जानती हो कि विद्यापति हम से भिन्न वातावरण, आचार-व्यवहार और संस्कृति का आदी है । अच्छा, तुम्हारे संतोष के लिए मैं उस की इच्छा की पूर्ति करूँगा ।" कहते हुए विश्वावसु ने प्यार से बेटी के सिर पर हाथ रखकर सहलाया ।

भगवान की पूजा का दायित्व दूसरों के हाथ सौंपते वक़्त ही गुफा का रास्ता किसी को बता सकता है, तब तक उसे गुप्त रखना एक नियम था । इस नियम का अतिक्रमण न कर सकता, इस लिए विश्वावसु ने कहा कि

विद्यापति की आंखों पर एक पट्टी बांध दी जाएगी । विद्यापति ने इस के लिए अपनी स्वीकृति दे दी ।

दूसरे दिन पूर्ववत् सूर्योदय के एक घंटा पहले ही विश्वावसु बिस्तर से उठा और तैयार हुआ । फिर विद्यापति की आंखों पर काली पट्टी बांधी, उसका दायां हाथ पकड़कर रास्ता बताये बिना ही उसे लेकर गुफा की तरफ विश्वावसु निकल पड़ा ।

विद्यापति ने पहले ही बायें हाथ की मुट्ठी में काफी सरसों को पकड़ लिया, रास्ते में छोड़ते हुए जाने लगा । इस तरह गुफा तक रास्ते में विद्यापति सरसों को छोड़ता ही गया ।

एक जगह विश्वावसु रुका । विद्यापति से कहा, "हम गुफा के पास पहुँच गये । सिर झुकाकर गुफा के भीतर चलो ।" फिर विश्वावसु ने विद्यापति की आंखों से काली पट्टी खोल दी ।

विद्यापति ने आँखें खोलकर देखा । चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था । धीरे-धीरे कुछ-कुछ उसे दिखाई देने लगा । थोड़ा-थोड़ा धुंधला । गुफा के बीच रही पत्थर की वेदिका पर विद्यापति की आँखें टिकीं । विश्वावसु ने उस प्रस्तरवेदिका पर कुछ फूल रखे ।

अचानक उस गुफा में नीले रंग का प्रकाश चमक उठा । पल भर में बांसुरी बजाने वाले श्रीकृष्ण का रूप विद्यापति के सामने दिखाई पड़ा । आनंद और आश्चर्य के साथ विद्यापति भावविभोर हुआ और उसके मुंह से चीख निकली, "आहा!"

"क्या हुआ बेटा?" यूं पूछते हुए विश्वावसु ने विद्यापति की पीठ पर एक थपकी दी ।

इस पर विद्यापति होश में आया । मगर कुछ नहीं कहा । चुप रहा ।

"क्या हुआ तुम्हें? कोई सपना देख रहो हो दिनदहाड़े जो कि यूं चीख रहे हो?" विश्वावसु ने पूछा ।

"कुछ नहीं ।" विद्यापति ने कहा । फिर चुप रहा ।

विश्वावसु को यह समझते देर न लगी कि अपनी चीख का कारण विद्यापति बताना नहीं चाहता । इस लिए विश्वावसु ने अपना सवाल नहीं दोहराया । जिस तरह गुफा के पास आते वक़्त विद्यापति की आंखों पर पट्टी बांधी गयी थी, उसी तरह वापस जाते वक़्त भी पट्टी बांधकर विश्वावसु ने सावधानी बरती ।

पति को देखते ही ललिता ने पूछा, "आप ने गुफा में क्या देखा?"

इस पर विद्यापति ने संजीदगी से कहा, "अंधकार से भरी गुफा में देखने को क्या रहेगा? विशेष रूप से कहने को कुछ भी नहीं रहा ।"

गुफ़ा में जो अलौकिक और अद्‌भुत दृश्य उसने देखा, उसके बारे में पत्नी ललिता के पास बोलना भी उसने मुनासिब नहीं समझा । उस रहस्य को अपने ही मन छुपा लेने में उसने बड़ी तकलीफ़ उठायी । ऐसी विषम परिस्थिति का उसने पहले कभी सामना नहीं किया था ।

'दैवी प्रेरणा से इन्द्रद्युम्न महाराजा ने भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए एक महान कार्य

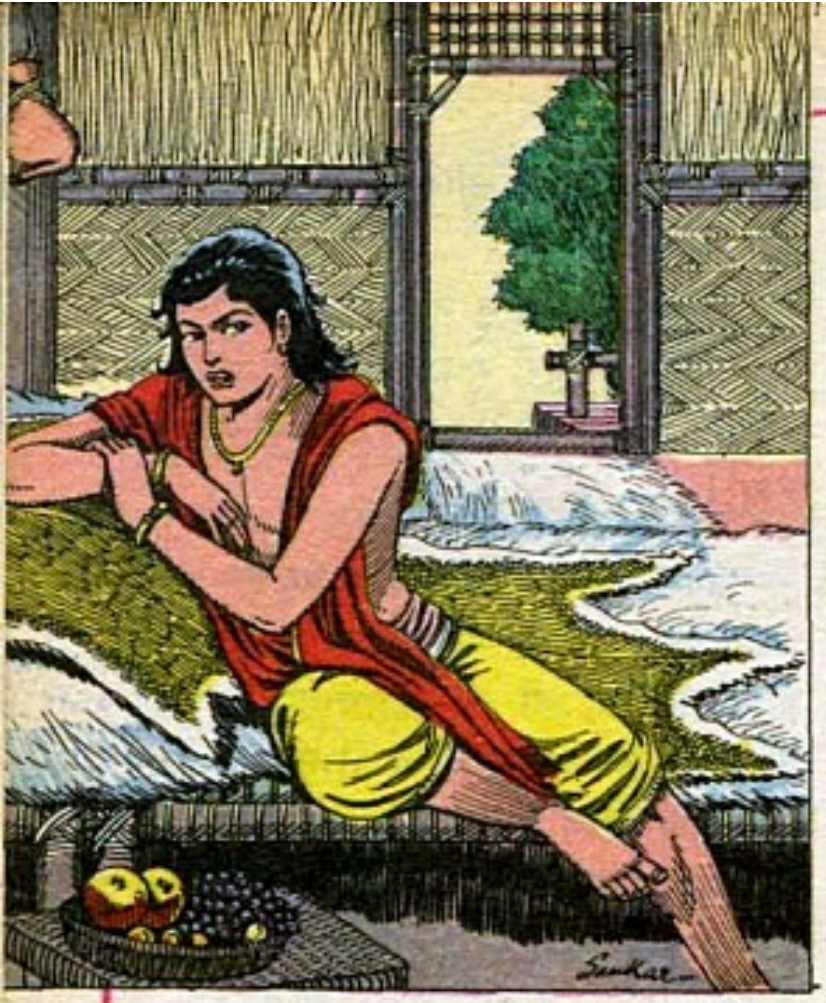

संपन्न करने की दीक्षा ली और एक महान दायित्व उन्होंने मेरे हाथों सौंपा था। महाराजा की आज्ञा पर दैवी कार्य संपन्न करने खुद निकला था, किंतु यहाँ रास्ते के बीच ही रुका। और ललिता से खुद ने शादी कर ली। इस लिए, गुफा के अनुभव के बारे में ललिता से बताना इतना ज़रूरी नहीं, जितना कि महाराजा द्वारा सौंपा गया काम संपन्न करना।' विद्यापति के विचार इस तरह गुज़रने लगे।

यह रहस्य ललिता से बताये बिना, चुप रहने से समस्या का हल नहीं होगा। विद्यापति की समझ में आया कि विश्वावसु जिस मूर्ति की पूजा कर रहा था, वह श्रीकृष्ण की थी। उस प्रस्तरमूर्ती को अपने साथ लेकर राजधानी पहुँचना ही अपना कर्तव्य होगा, यूं विद्यापति ने सोचा। तुरंत उस के मन में एक और विचार आया कि ऐसा करना, अपने ऊपर इतना विश्वास रखने वाले विश्वावसु के प्रति बेईमानी ही होगा। ऐसी नमकहरामी करना अपने लिए क्या वाजिब होगा?

इस तरह विद्यापति भला-बुरा और धर्म-अधर्म के बारे में काफी देर तक सोचता ही रहा। उसके मन में एक विचार आया कि विश्वावसु ने सचमुच अपने ऊपर विश्वास नहीं रखा था। वरना इस तरह अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर गुफा तक ले जाने की बात वह नहीं सोचता। ऐसी हालत में गुफा से भगवान की मूर्ति उठाकर ले जाना क्या अधर्म कहलाएगा?

इस तरह दिन भर विद्यापति सोचा करता था। अनमना रहता था। ऐसे विचारों की वजह से रात में भी उसे नींद नहीं आती थी। इस तरह सिर्फ़ विचारों से तो किसी भी समस्या का हल नहीं होता।

विद्यापति में आये परिवर्तन को देखकर, ललिता उदास रहने लगी। वह सोचने लगी कि विद्यापति के दुख का क्या कारण हो सकता है। क्या उस का मन कहीं अपने शहर की सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षित हो रहा है? अपने साथ शादी करने की बात पर क्या वह पछता रहा है? असली बात जानने के लिए एक दिन ललिता ने पति से पूछा कि वह किस बात पर इतना उदास है।

Sankar

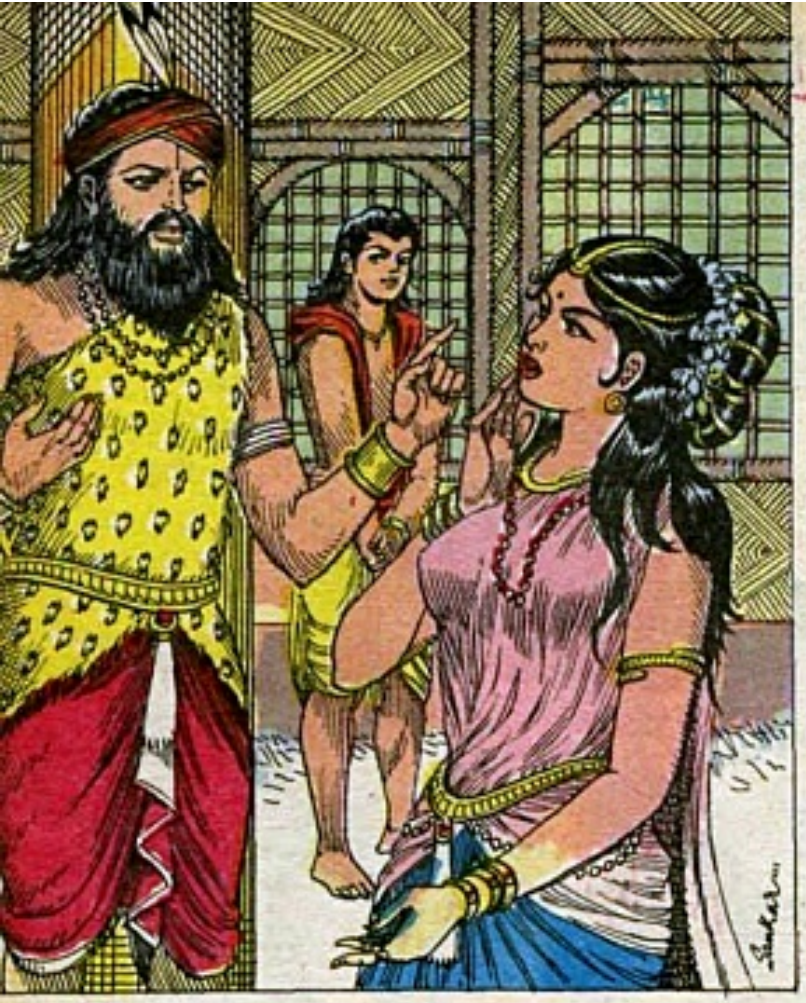

"शहर का तड़क-भड़क यहाँ नहीं है । फिर भी मैं इस बात पर जरा भी दुखी नहीं हूँ । राजधानी में रहे अपने माता-पिता को छोड़कर मैं आया । काफी वक़्त गुज़र गया । मेरा समाचार न मिलने से वे काफी चिंतित रहेंगे । शीघ्र वहाँ जाकर अपने वृद्ध माता-पिता का योग-क्षेम देखना पुत्र के नाते मेरा धर्म है न? फिर भी, तुम्हें छोड़कर जाना मेरे बस का काम नहीं लगता । यदि मैं तुम्हें अपने साथ ले जाता तो वहाँ के लोग शायद तुम्हें अजीब ढंग से देखने लगेंगे । और तुम्हें जान से ज्यादा चाहने वाला तुम्हारा पिता तुम से बिछुड़कर यहाँ अकेले क्या रह सकेगा? तुम्हें देखे बिना क्या वह इस बुढ़ापे में यहाँ सुखचैन से जी सकेगा?" विद्यापति ने पूछा ।

"हमेशा की तरह जब तक आप मुझे प्यार के साथ देखा करेंगे, मुझे किसी बात की चिंता नहीं रहेगी । ऐसी हालत में लोग मेरे बारे में कुछ भी सोचें-कहें, मैं परवाह नहीं करती ।" ललिता ने कहा । फिर थोड़ी देर चुप रहकर, आंसू पोंछते हुए कहने लगी, "मैं आप के साथ आना ही चाहती हूँ, लेकिन ऐसा करती तो मेरे पिता की देखरेख कौन करेगा? यही चिंता मुझे खटक रही है ।"

"तुम्हारा विचार सही है । अपने पिता को यूं अकेले छोड़कर मेरे साथ आना अच्छा नहीं होगा । इस लिए तुम यहीं रहो । यदि मुझे इज़ाज़त दोगी तो मैं अपने माता-पिता को देखने के लिए जाना चाहता हूँ । फिर जल्दी वापस आ जाऊँगा ।" विद्यापति ने ललिता से कहा ।

"सच? क्या आप वाक़ई वापस आयेंगे?" ललिता ने उदास चेहरे को उठाकर आश्चर्य से पूछा ।

"तुम से बिछुड़कर क्या मैं अकेले रह पाऊँगा?" विद्यापति ने पूछा, जिस से ललिता को आश्वासन मिला ।

"ऐसी बात है तो आप जाइए, जल्दी लौट आइए । आप मेरे सास-ससुर को बताइए कि मैं उन के आसीस लेने के शुभदिन की प्रतीक्षा कर रही हूँ ।" ललिता ने कहा ।

अपने पति की इच्छा के बारे में ललिता ने पिता से बात की । विश्वावसु ने भी अपनी स्वीकृति दे दी । विद्यापति के लिए अनेक उपहारों का इंतजाम करने लगा । मगर

उपहार अपने साथ ले जाने के लिए विद्यापति तैयार नहीं हुआ था, इस लिए उस ने कहा, "उपहार ले जाने का यह समय नहीं है। ललिता को साथ लेकर जाते वक़्त उपहार ज़रूर ले जाऊँगा। पहले अपनी शादी के बारे में मुझे अपने माता-पिता को बताने दीजिए। बाद में ललिता को साथ ले जाते वक़्त उपहार भी ले जाऊँगा।"

ये बातें विश्वासु को वाजिब लगीं। दामाद की यात्रा के लिए एक अच्छे घोड़े का प्रबंध किया।

विश्वासु और ललिता से अलविदा कहकर, विद्यापति घोड़े पर बैठा और राजधानी के लिए निकला। ललिता ने आंसू के साथ विद्यापति को विदा किया।

कुछ दिन पहले गुफा को जाते वक़्त गुप्त रूप से छोड़ी गयी सरसों के अब तक पौधे निकल चुके थे। उन की वजह से गुफा का रास्ता साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा। विद्यापति आसानी से गुफा के पास पहुँचा।

गुफा के मुखद्वार को छिपाते हुए बड़े-बड़े पत्थर रखे हुये थे।

विद्यापति घोड़े से उतरा। सावधानी बरतते हुए गुफा के भीतर पहुँचा। वहाँ एक और बार उसने दिव्य अनुभूति पायी। मन ही मन उस ने भगवान से क्षमा-याचना की, 'भगवन्, तुम्हीं पर भरोसा रखकर, अपने लिए जो श्रेष्ठ दिखाई दिया, वह कर्तव्य निभा रहा हूँ। मुझ से कोई अपराध हुआ तो मुझे क्षमा करो भगवन्, मेरी रक्षा करो!' फिर प्रस्तरवेदिका पर रही उस छोटी सी प्रस्तरमूर्ति को उठाकर, विद्यापति ने उसे आँखों से लगा लिया। फिर उस मूर्ति को थैली में डालकर, गुफा से बाहर आया। घोड़े पर बैठा।

प्रतिमा की चोरी करके भी वह हीनभावना की लपेट में नहीं आया, चूंकि इसे पवित्र कार्य समझता था।

विद्यापति को सही रास्ता मालूम नहीं था। फिर भी भगवान पर ही भरोसा रखकर, उस ने घोड़े को एड़ दी। विद्यापति को लेकर घोड़ा आगे बढ़ा। (क्रमशः)

वक़्त की सूझ

विजयपुरी के दरबार में रहनेवाला रामदेव था बड़ा जादूगर, साथ ही सूझ-बूझ में तेज़-तर्रार भी । एक बार राजा ने शाही चीज़ों की प्रदर्शनी का इंतजाम किया । राजा के महल में जो भी बेशक़ीमत गहनें और हीरे-जवाहरात थे, उन्हें उस प्रदर्शनी में रखने का राजा ने प्रबंध किया, ताकि आम जनता भी उन शाही चीज़ों को देखकर खुश रहे । रामदेव अपने साथ अपने दोस्त हरीश को भी लेकर उस प्रदर्शनी में गया ।

हरीश ने पहरेदारों की आंखों में धूल झोंककर, एक नौलखहार की चोरी की । रामदेव ने दोस्त की यह करतूत देख ली, हैरान हुआ । खुद तो राजा का नमक खा रहा था, इस चोरी को देखकर यूं तो चुप नहीं रह सकता । चुप रहने का मतलब होगा नमकहराम बनना । चोरी की बात फ़्रकट करे तो दोस्त हवालात में बंद होगा । ऐन मौके पर सही सूझ के लिए रामदेव काफ़ी मशहूर था ।

दरबारी जादूगर रामदेव ने प्रदर्शनी देखने आये लोगों से कहा, "भाइयो, तुम लोगों को अब मैं एक जादू का खेल दिखाऊँगा, इस से काफी मनोरंजन होगा । देखिए, मैं एक नौलखहार इन गहनों से ग़ायब कर दूँगा और मेरे दोस्त की जेब से निकालूंगा ।" इतना कहा, हाथ हवा में घुमाया जादूगर रामदेव ने । फिर अपने दोस्त हरीश की जेब से उसने नौलखहार बाहर निकाला । लोग चकित हुए, तालियां बजाने लगे ।

रामदेव का दोस्त हरीश शर्म से पानी पानी हो गया । वक़्त की सूझ से रामदेव ने जिस खूबी से दोस्त हरीश को बचाया, उस की मन ही मन हरीश ने तारीफ़ की ।

—अजय कुमार वर्मा

बूढ़े की समझदारी

बात पुरानी थी । ग्रीस देश में रहते थे एक बूढ़ा और उस की पत्नी । एक दिन बूढ़े ने पत्नी से कहा, "देख री, पैसे की सख्त ज़रूरत है । हमारी गाय को हाट में बेचकर आना । मैं ही जाता, लेकिन मेरे पाँव में मोच आयी है ।"

गाय को हांककर बूढ़ी हाट की ओर निकली । रास्ते में तीन चोरों ने देख लिया बूढ़ी को और उस के साथ रही अच्छी-ख़ासी गाय को । तुरंत वे ताड़ गये कि बूढ़ी गाय बेचने जा रही है । गाय सस्ते भाव पर ली जाये, इस के लिए तीनों चोरों ने सोच ली एक तरकीब ।

एक चोर ने बूढ़ी से मिलकर कहा, "नानी माँ! यह बकरी कहाँ ले जा रही हो?"

"अरे बुद्धू कहीं का! गाय को देख रहे हो और कहते हो बकरी? तेरी आँखें चरने गयी हैं क्या?" बूढ़ी ने गुस्सा करते हुए पूछा ।

चोर ने मलमलकर आँखें साफ करने का ढोंग रचा, गाय की तरफ़ तीन-चार बार देख लिया । फिर कहा, "नानी, राम की क़सम! मैं झूठ नहीं बोलता । यह तो एकदम बकरी है । तीस रुपये में देना है तो मुझे ही बेच देना ।"

बूढ़ी ने हाथ में रही छड़ी हवा में नचाते हुए कहा, "जा रे जा! बड़ा आया है मोलतोल करने वाला!" फिर बूढ़ी आगे बढ़ी ।

बूढ़ी थोड़ी दूर चली कि दूसरा चोर जा मिला और पूछा, "दादी माँ! कहाँ जा रही हो?"

"हाट तक जाना है रे । तेरे दादा ने इसे बेचने का काम सौंपा है ।" बूढ़ी ने कहा ।

"बात यूं है तो सुनो दादी माँ, पच्चीस रुपैये के लिए इसे मैं ही ले लूँगा ।" चोर ने कहा ।

"अरे बेवकूफ़! खोपड़ी तेरी औंधी है क्या? मेरी गाय एकदम हीरा है हीरा, समझे? बकरी के दाम पर इसे मैं क्यों बेचूँ?" बूढ़ी ने पूछा ।

दूसरे चोर ने बूढ़ी को आश्चर्य से देखा और कहा, "दादी माँ । बूढ़ी हो गयी हो । तुम्हारी आँखों की रोशनी मंद पड़ गयी होगी । वरना

ग्रीस की लोककथा

यूँ बकरी को गाय नहीं कहती ।"

बूढ़ी ने एक बार चोर की तरफ़ देखा और कहा, "हाँ, मेरी आँखें ठीक से दिखाई नहीं पड़ती ।" फिर बूढ़ी आगे बढ़ी । लोग अपनी गाय को देखकर बकरी क्यों कह रहे हैं, यही सोचने लगी बार बार वह ।

यूँ सोचते हुए बूढ़ी आगे बढ़ी थोड़ी दूर और तब तीसरा चोर जा मिला बूढ़ी से और कहा, "फूफी, अपनी बकरी बेचना है तो बताना । बीस रुपैये देकर मैं ही ख़रीद लूंगा ।"

"तब तो है यह बकरी ही! यह कोई जादू-टोना लगता है रे! जब मैं घर से निकली, तो थी मेरे साथ गाय ही ।" बूढ़ी ने कहा ।

"फूफी, लगता है तुम पित्तज्वर से पीड़ित हो । बीस रुपैये में बेच दो इसे और घर जाकर आराम कर लेना ।" तीसरे चोर ने बूढ़ी पर तरस खाते हुए कहा ।

"एक ने तीस रुपैये देना चाहा तो दूसरे ने पच्चीस रुपैये । अब इसे मैं बीस के लिए कैसे दे सकती हूँ तुम्हें? लेना है तो तीस रुपैये देकर ही ले लेना ।" बूढ़ी ने कहा ।

"वाक़ई यह बकरी तीस रुपैये की नहीं है फूफी! फिर भी, बूढ़ीफूंस हो । हाट तक चलना भी तुम्हारे लिए मुश्किल है, इस लिए दे रहा हूँ तीस रुपैये । ये लो अपनी बकरी के पैसे!" चोर ने कहा, अंटी से पैसे निकाले ।

बकरी के दाम पर इस तरह गाय को बेच दिया था बूढ़ी ने । घर लौटकर पति से सारी बात बता दी । तीनों चोर कैसे रहते हैं, यह भी बूढ़ी ने पति को समझा दिया । इस पर बूढ़ा समझ गया कि वे तीनों ठग पड़ोसी गाँव के हैं । तब कहा पत्नी से, "जो होना था सो हो गया । आगे का काम मैं संभाल लूंगा ।"

बूढ़ा बाहर गया । एक ही तरह दिखाई देनेवाले दो ख़रगोश ख़रीद कर आया । एक ख़रगोश को घर पर झाबे के नीचे बंद कर दिया । दूसरे ख़रगोश को एक और झाबे में रखकर, बाहर जाते हुए पत्नी से बूढे ने कहा, "देखरी, आज हमारे घर खाने के लिए मेहमान आयेंगे । शहद की रोटियाँ, तला हुआ बतख़ का मांस और खीर बनाकर रखना । वापस आते ही मैं पूछूंगा कि रसोई में क्या-क्या चीज़ें बनायीं । जवाब देना कि ख़रगोश से जो-जो चीज़ें बनाने की ख़बर भेजी, वे तैयार हैं ।"

बूढ़ा जब पड़ोस का गाँव पहुँचा, तीनों चोर उसे मयख़ाने में दिखाई पड़े। शराब पी-पीकर धुत्त पड़े रहे। बूढ़े को देखकर पहचान लिया और कहने लगे मज़ाक के अंदाज़ में, "अरे बड्ढ़े! तुम्हारी बीवी इतना भी नहीं जानती कि गाय क्या होती है और बकरी किसे कहते हैं!"

"क्या करूँ बेटे? इन दिनों उस का दिमाग़ ख़राब हो गया है। मगर रसोई बहुत अच्छी बनाती है बेटे।" बूढ़े ने कहा।

कुछ सोचने का ढोंग रचते हुए बूढ़े ने स्वगत की बातें कह दीं यूं, "आज रसोई में क्या-क्या चीज़ें बनाने की ख़बर भेजूँ? हाँ, खीर... शहद की रोटियाँ और... तला हुआ बतख़ का मांस खायेंगे आज!" फिर झाबे से ख़रगोश को निकालकर, उस से बूढ़े ने कहा, "देख रे ख़रगोश, जल्दी घर को जाना और मालकिन को ख़बर देना कि आज खीर, शहद की रोटियाँ और तला हुआ बतख़ का मांस बना दे।" इतना कहकर छोड़ दिया खरगोश को बूढ़े ने।

धमाचौकड़ी और कूद-फांद के साथ ख़रगोश पलक झपकते ही हुआ ग़ायब। यह सब देखकर चोर चौंक पड़े। बूढ़े से पूछा एक चोर ने, "क्या वह ख़रगोश सचमुच तुम्हारे घर जाकर, बूढ़ी को पहुँचा देगा ख़बर?"

"हाँ, क्यों नहीं? इत्ता छोटा था जब वह, तब से पला मेरे हाथों। ये सब काम रोज़ वही करता है। आज तुम लोग भी मेरे साथ चल दो, खाओ तुम भी वे चीज़ें।" बूढ़े ने कहा।

तीनों चोर निकले बूढ़े के घर खाने-पीने और ख़रगोश की सचाई जानने। घर पहुँचते ही बूढ़े ने पूछा बूढ़ी से, "रसोई में क्या-क्या चीज़ें बनायीं?"

"खरगोश से जो-जो चीज़ें बनाने की ख़बर भेजी, वे सब तैयार हैं!" बूढ़ी ने कहा।

चारों को बूढ़ी ने खाना परोसा। बूढ़े ने जो-जो चीज़ें ख़रगोश से कहीं, वे सब खाने में तैयार थीं। चोर आपस में कानाफूसी करने लगे। फिर बूढ़े से कहा कि वह अपना ख़रगोश उन्हें बेच दे।

"अपना प्यारा-दुलारा खरगोश मैं क्यों बेचूँ? नहीं, नहीं। मैं हरगिज़ ऐसा काम नहीं करता।" बूढ़े ने कहा।

इस पर चोरों ने ख़रगोश का दाम दस

हज़ार रुपये तक बढ़ा दिया । फिर भी बूढ़ा अपनी बात पर अटल रहा । इस पर बूढ़ी ने बुड्ढे से कहा, "देखो, बच्चों का मन डोल रहा है तुम्हारे ख़रगोश पर । बेच दो न! तुम भी आख़िर पैसे की ज़रूरत में हो ।"

तब बूढ़े ने चोरों से कहा, "हमारी गाय जैसे बकरी बन गयी, वैसे यह ख़रगोश भी बदल जाये तो?" इस पर चोरों ने कहा, "डरना मत बुड्ढे! ऐसा कुछ नहीं होगा ।"

इतनी बातें होने के बाद बूढ़े ने चोरों से हज़ार रुपये लिये । उन्हें ख़रगोश दे दिया ।

ख़रगोश के साथ चोर जाने लगे अपना गाँव । उस वक़्त चोरों ने सोचा, पहले ख़रगोश के द्वारा ख़बर भेजकर अपनी-अपनी घरवालियों को बता देंगे कि खुद क्या-क्या चीज़ें खाना चाहते हैं । तीनों ने अलग -अलग ख़रगोश से कह दिया कि अपनी अपनी पत्नियों से क्या क्या कहें । फिर चोरों ने छोड़ दिया खरगोश को । फौरन ख़रगोश हुआ नदारद ।

तीनों चोर लौटे अपने-अपने घर । उन्हें पता चला कि ख़रगोश नहीं आया । सोचा चोरों ने कि बूढ़ेने उन्हें धोखा दिया है । इस पर तीनों चोर चल दिये बूढ़े के घर और बकने-झकने लगने ।

बूढ़े ने उन से पूछा, "ख़रगोश को भेजते वक़्त, उसका सारा बदन तुम लोगों ने सहलाया कि नहीं?"

चोरों ने नकारात्मक सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं तो!"

"तब—वह ख़रगोश मुट्ठी भर हवा में बदल जाएगा, शक नहीं ।" बूढे ने कहा ।

"ख़रगोश का हवा में बदलना क्या? होश-हवास संभालकर बात करो ।" चोरों ने कहा ।

इस पर हंसते हुए बूढ़े ने कहा, "देखो बेटे! उतनी बड़ी गाय जब इतनी छोटी बकरी बन गयी, तो ख़रगोश का हवा में बदल जाना कौन सा अजूबा है?"

तब जाकर चोरों को पता चला कि बूढ़े ने इंतकाम ले लिया था । इस पर वे चोर मन मसोसकर वहाँ से चल दिये ।

हरजाना

सोनपुर गाँव में रहता था मणिराम । पिछवाड़े में उसने कलंबिका बेल लगायी । लगन से उस की देखरेख करता था । वक़्त पर देता था पानी और डालता था बीच-बीच में खाद । इस पर बेल जल्दी फैल गयी खूब । चंदोवा को पार करके पास की चहारदीवार पर भी फैल गयी ।

उसी गाँव में रहता था एक किसान । नाम था भीमल । वह था मोटा और मालदार । भीमल के बकरे ने चहारदीवार चढ़कर, कलंबिका बेल के तीन-चार पत्ते खाये । तभी मणिराम ने इत्तफ़ाक़ से देख लिया उस बकरे को । कंकड़ फेंककर उस ने बकरे को वहाँ से भगा दिया । भीमल के पास जाकर कह भी दिया इस बारे में । फिर सुझाव भी उसे दे दिया कि वह अपने बकरे को अपने ही घर किसी खूंटे से बांध कर रख ले या चरने के लिए जंगल में ले जाये ।

भीमल को गुस्सा आया, मगर कुछ नहीं बोला । सिर हिलाकर चुप रहा । उस के बाद भी तीन-चार बार बकरा आया, बेल खाने लगा, मणिराम ने भगा दिया सब्र से ।

एक बार सुबह आया भीमल का बकरा । मणिराम की कलंबिका बेल खा ली पूरी की पूरी । यह देखते ही मणिराम हो गया गुस्से से पागल । पास में रही कुल्हाड़ी उठायी उस ने, फेंक दी बकरे पर । कुल्हाड़ी जा लगी बकरे के सिर से । इस पर बकरा तड़प-तड़पकर, वहीं ढेर हो गया । बकरा यूँ मर चुका जब, अपनी करनी पर बड़ा दुखी हुआ मणिराम ।

बकरे की मौत का समाचार भीमल को मिला । तुरंत वह मणिराम के घर चला आया । मूंछें ऐंठते हुए उस ने कहा, "मेरा बकरा अच्छी नस्ल का है । यह बात तुम भी जानते हो । सौ टके देकर खरीदा मैंने इसे । वह रकम हरजाने की चुकाओ अभी मुझे ।"

कमला मोहन

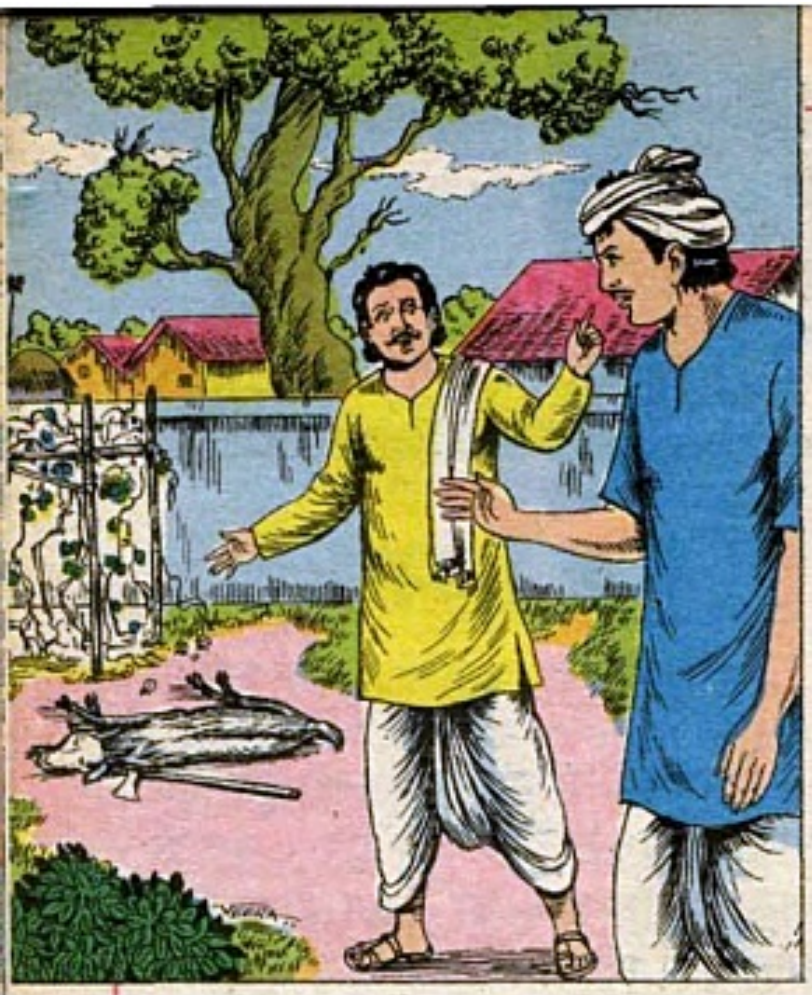

भीमल की बातें सुनकर मणिराम भौंचक रह गया । वह बकरा अच्छी नस्ल का है या नहीं, यह तो भगवान ही जाने । सौ टके देकर खरीदने की बात भी होगी कहाँ तक सच, कोई नहीं कह सकता । मौक़े का नाजायज़ फायदा उठाना चाहता था भीमल । मणिराम यह बात समझ गया ।

मणिराम सिर्फ़ दस टके हरजाना देना चाहता था । चाहे तो उस बकरे के बदले में कोई और बकरा खरीदकर देने के लिए भी वह तैयार था । मगर भीमल टस से मस न हुआ । हठ किया उस ने कि सौ टके हरजाना ज़रूर दिया जाय ।

भीमल से मणिराम ने विनती की कि वह इतनी रकम नहीं दे पाएगा, इसलिए रहम के साथ उस के साथ पेश आये और कुछ न कुछ घटा दे हरजाने की रकम । पर भीमल ने बेरहमी से साफ़ -साफ़ कह दिया यूँ कि चाहे तो हरजाना सौ टके का दे दे या अपने मर चुके बकरे को जिलाकर दे दे । दूसरी बात सुनते मणिराम का दिल खीज से बोझिल हुआ ।

मणिराम को बेहद गुस्सा आया भीमल पर । उसने साफ़-साफ़ कह दिया, "हो तुम मोटे किसान, पर मैं परवाह नहीं करता । दस टके से ऊपर एक फूटी कौड़ी भी तुम्हें मुझ से नहीं मिलेगी ।"

इस पर भीमल और मणिराम के बीच थोड़ी देर तू तू मैं मैं चली खूब । कोई भी पीछे नहीं हटा । भीमल को यह जानने में देर नहीं लगी कि मणिराम किसी भी हालत में उसे सौ टके देना नहीं चाहता ।

भीमल उसी वक़्त उस गाँव के ज़मींदार के पास गया । बता दिया कि किस तरह मणिराम की क़ुल्हाड़ी से अपना बकरा मर चुका । फिर अर्ज़ किया कि मणिराम से सौ टके हरजाना दिलवा दें ।

सोनपुर का ज़मींदार था शंकाशील । तुरंत पता लगा नहीं पाता कि कौन था क़ुसूरवार और कौन था बेक़ुसूर । कोई उसके पास आये और कहने लगे कुछ तो समझता कि वह सब है सच । घबड़ा जाता है हर छोटी सी बात पर ।

भीमल की फ़रियाद सुनकर ज़मींदार ने मणिराम को ख़बर भेजकर बुलवा लिया अपने पास ।

"मैंने जानबूझ कर बकरे को नहीं मारा। हमारी कंलबिका बेल खाने लगा तो मैं ने कुल्हाड़ी फेंकी उस पर। वह जाकर बकरे के सिर पर लगी, बकरा मर गया था।" मणिराम ने कहा।

"भूल तुम्हारी है न? हरजाना चुका लो तब!" जमींदार ने कहा।

"इस में मेरी भूल क्या है? कलंबिका बेल नहीं लगाता तो वह बकरा नहीं आता। यदि वह बकरा नहीं आता तो मेरे हाथों यूँ नहीं मरता। इस ज़ुल्म की वजह है वह निगोंड़ी बेल!" मणिराम ने कहा।

"ठीक कहा तुम ने! वह बेल तुम ने लगायी ही क्यों?" ज़मींदार ने पूछा।

मणिराम ने सोच लिया पल भर। फिर बता दिया यूँ, "हमारे सामने के घर में रहनेवाला केसर एक बार मेरे घर आया, कलंबिका के बीज दिये। फिर मैंने पिछवाड़े में वे बीज बो दिये। आप ही बताइए कि भूल किस की है!"

इस पर ज़मींदार ने सोचा कि असली क़ुसूरवार है केसर। तुरंत उसने केसर को बुलवा लिया।

केसर तुरंत भागकर चला आया ज़मींदार के पास। सिर से पैर तक डर से कांपने लगा।

"मैंने सुना कि तुम ने मणिराम को कलंबिका के बीज दिये थे। सही-सही बताओ कि वे बीज तुमने दिये या नहीं!" ज़मींदार ने केसर से पूछा।

केसर ने स्वीकारते हुए कहा, "सही बात है हुजूर यह। मैंने ही कलंबिका के वे बीज दिये मणिराम को।"

"देखो, वे बीज तुम ने उसे दिये। इसी लिए उसने पिछवाड़े में बो दिया उन्हें। वह बेल फैली और भीमल के बकरे ने खा लिया उसे। इस पर मणिराम ने कुल्हाड़ी फेंकी। बकरा मर चुका। तुम वे बीज नहीं देते तो यह सारी बरबादी नहीं होती। मेरे ख़याल से इस में सारी ग़लती तुम्हारी ही लगती है। तुम क्या कहते हो?" जमींदार ने पूछा।

यह सब सुनकर केसर डर से सिहरने लगा। बोला यूँ, "हूजूर। इस में मेरा क़सूर रत्ती-राई भर भी नहीं है। सारा का सारा दोष उस छोलेभाई का है।"

"छोलेभाई? वह कौन है?" ज़मींदार ने

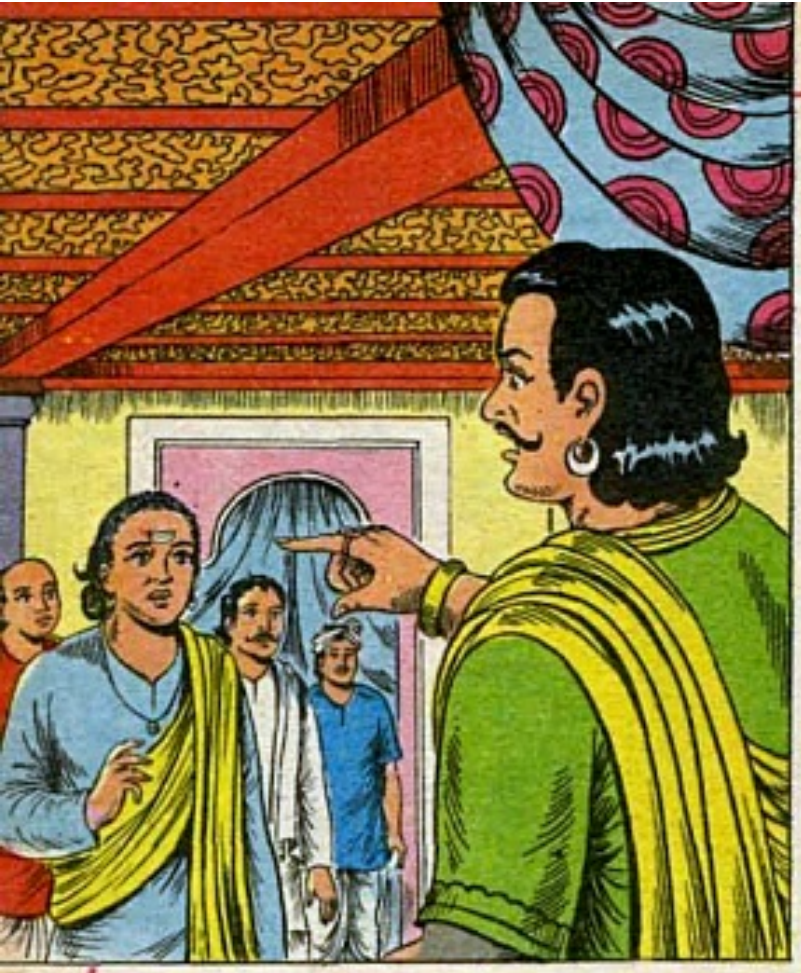

ताज्जुब से पूछा ।

"वह इस गाँव का एक छोटा वैद्य है । एक बार मेरा तन-बदन खुजली से पीड़ित रहा । इस पर मैं छोलेभाई के पास गया । तब मुझे उसने कलंबिका के बीज दिये और कहा कि यदि एक साल मैं कलंबिका का साग खाऊँ तो खुजली दूर हो जाएगी । उन बीजों में से थोड़े मणिराम को मैं ने दिये ताकि उस के घर में भी वह साग खाया जाय. । इस में मेरा अपराध नहीं है ज़ारा भी । इस हल्लेगुल्ले की जड़ है छोलेभाई ।" केसर ने कहा ।

केसर की बात ज़मींदार को सही लगी । तुरंत उसने छोलेभाई को ख़बर भेजी । छोलेभाई जानता था कि यह ज़मींदार एक नंबर का सनकी है । घबड़ाहट के साथ छोलेभाई दौड़ा-दौड़ा आया ज़मींदार के पास ।

छोलेभाई को देखते ही ज़मींदार ने डांट-फटकार सुनायी फट से, "हे छोलेभाई, यह तुमने क्या किया? खुजली के रोग से केसर तुम्हारे पास आया तो तुम ने उसे दवादारू की जगह कलंबिका के बीज क्यों दिये? वह साग रोज़ खाने की बात क्यों कही उस से?"

छोलेभाई की समझ में नहीं आया कि आख़िर बात क्या है । इसलिए उसने पूछा ज़मींदार से, "इस से किसी को नुकसान क्या होगा हुज़ूर?"

"नुकसान हो गया न! देखो, केसर को तुम ने जो बीज दिये, उन से थोड़े उसने मणिराम को दिये । मणिराम ने वे बीज बोये जिस से बेल उगी, बढ़ी, फैली । भीमल के बकरे ने उस बेल को खा लिया था पूरा का पूरा । इस पर गुस्से में मणिराम ने कुल्हाड़ी फेंकी उस बकरे पर । वह कुल्हाडी ठीक बकरे के सिर पर लगी जिस से वह उसी वक़्त ज़मीन पर लुढ़क गया, छटपटाकर मर गया था । भीमल कहता है कि सौ टके खर्च करके उसने वह बकरा अजमेर में खरीदा । अब भीमल को हरजाना कौन देगा? यह सब नहीं होता यदि तुम केसर को कलंबिका के बीज नहीं देते । इसलिए, क़ुसूरमंद तुम ही हो न?" ज़मींदार ने पूछा ।

यह सब सुनते ही छोलेभाई को लगा कि उसके सिर पर गाज पड़ गयी हो । इस में सारा दोष भीमल का ही है । यदि वह अपने बकरे को किसी खूंटे से बांधकर रखता तो यह

सब नहीं होता । खुद क़ुसूरवार होकर भीमल हरजाना वसूली की कोशिश में रहा । मणिराम और केसर अच्छी तरह जानते हैं कि ज़मींदार किस कदर सनकी है । इसलिए चालाकी से यह दोष अपने सिर मढ़ने की कोशिश में हैं, यूँ छोलेभाई ने सोचा । उसी वक़्त छोलेभाई को एक तरकीब सूझी ।

"हुजूर, तन-बदन की खुजली दवादारू से भले ही दूर हो, वह हमेशा के लिए ऐसा नहीं होता । हम जो खाते हैं उस में कुछ अभाव होते हैं, जिस से ऐसे रोग आते हैं । इन रोगों को जड़ से उखाड़ देना है तो खान-पान में परिवर्तन लाना ज़रूरी होता है । कलंबिका का साग खाने से केसर की खुजली शाश्वत रूप से दूर होगी । बतौर हकीम के मैंने अपना फ़र्ज निभाया । इस सारे अहित का कारण है मेरा इस गाँव में हकीम बनकर यूँ रहना । वरना यह नुकसान नहीं होता । जो कुछ हुआ था, इसका मुझे बड़ा अफ़सोस है । लेकिन मैं लाचार हूँ ।" छोलेभाई ने दुख के अभिनय के साथ कहा ।

जमींदार थोड़ी देर गहरे सोच में पड़ गया । हकीम जो कुछ कह रहा था, वह सब ज़मींदार ने सच समझा । फिर छोलेभाई से उसने पूछा, "अच्छा, बताओ, तुम्हें इस गाँव में हकीम बनकर क्यों रहना पड़ा?"

इस पर छोलेभाई ने कहा, "हुजूर, आपने अच्छा सवाल किया । इस में मेरा कोई दोष नहीं है । उस वक़्त मैं अपने गुरु के पास वैद्यविद्या सीख रहा था । एक बार आपके पिताश्री श्री श्री श्री जगन्नाथजी हमारे गुरु के पास आये और बोले कि सोनपुर में वैद्य नाम के लिए एक भी नहीं रहा, जिस से लोगों को बड़ी तकलीफ़ हो रही है । उस वक़्त भीमल के पिताश्री किसी भयानक रोग से पीड़ित थे । आपके पिताश्री और भीमल के पिताश्री दोनों अच्छे दोस्त थे । यह बात आसपास के सौ गाँवों के लोग जानते हैं । सह बात शायद आप भी जानते होंगे ।"

"हाँ, हाँ । क्यों नहीं? आज भी लोगों के मुँह यह बात कहीं कहीं सुनाई देती है ।" ज़मींदार ने ख़ुशी से कहा ।

"हुजूर, आप की याददाश्त गहरी है, क़माल की है । इतनी छोटी सी बात भी आप नहीं भूले ।" छोलेभाई ने ज़मीनदार की

तारीफ़ की ।

इस पर ज़मींदार ख़ुशी से फूलकर कुप्पा हो गया और कहा "अच्छा, अब तुम असली बात पर आओ"

"हाँ, वही कह रहा हूँ हुजूर । आप के पिताश्री की बात पर हमारे गुरुजी ने मुझे यहाँ भेजा और कहा कि मैं यहाँ रोगियों की सेवा करते रहूँ । वरना मुझे इस गाँव में हकीम बनकर क्यों रहना पड़ता? आपके पिताश्री का अनुरोध और भीमल के पिताश्री का रोग—इन दोनों की वजह से मुझे इस गाँव में यूँ रहना पड़ा । इस लिए हरजाना वे ही चुकायें, यही वाजिब होगा ।" छोलेभाई ने इतमीनान से कहा ।

वैद्य की बातें भी ज़मींदार को सही लगीं । इस लिए ज़मींदार इस निष्कर्ष पर आया कि कुसूरवार हैं अपने पिताश्री और भीमल के पिताश्री । फिर छोलेभाई से कहा, "अच्छा, भाई छोले, अब मेरी समझ में आयी बात की असलियत । किसी ने सही कहा कि असलियत छिप नहीं सकती बनावट के उसूलों से । यही यहाँ साबित हुआ । इस में तुम्हारा दोष रत्ती-राई भर भी नहीं है । दोष सारा-पूरा मेरे और भीमल के पिताओं का है । लेकिन अब वे नहीं हैं ज़िंदा । उन से हरजाना कैसे वसूल कर सकेंगे?"

छोलेभाई की जान में जान आ गयी । उसने ज़मींदार से कहा, "हुजूर, आप भी आप के पिताजी की तरह हैं बड़े ही अक़्लमंद । आप का कहना बिलकुल सही है । मरे हुए लोग कैसे देंगे हरजाना?"

इस पर ज़मींदार को भीमल पर गुस्सा आया । उसने आँखें तरेर कर देखा भीमल को, फिर कहा, "देखो, इस निगोड़े झगड़े की असली वजह हो तुम । भेड़-बकरे पालने की क़ाबिलियत या ताकत तुम्हारे पास नहीं है । इस लिए आगे ऐसी हरकत कभी मत करना । वरना तुम्हें इस गाँव में रहने ही नहीं दिया जाएगा । समझे?"

इस फ़ैसले पर सब के सब हुए बहुत ख़ुश, सिर्फ़ भीमल को छोड़ । इस तरह बिना हरजाने के ही, हो गया झगड़े का ख़ातमा ।

ग़ज़ब के फूल

मलेशिया में शरीफ़ा के जैसे दीखने वाले अनोखी क़िस्म के पेड़ हैं। इन के फूल आम क़िस्म के पेड़ों के जैसे टहनियों से नहीं निकलते, बल्कि पेड़ों के तनों से तथा डालों मे निकलने लगते हैं।

बेहद नमकीन पानी

विश्व के बेहद नमकीन पानी का तडाग है डिजिबौटी का लेक अस्साल। इस का पानी आम समुद्री जल से दस गुना ज्यादा खारा होता है। इस लिए यहां कोई मछली ज़िंदा रह नहीं पाती। यह तडाग सागर की सतह से ५१० फुट नीचे है। पूरे अफ्रीका महाद्वीप में यही अकेला निम्नतम-सतही तडाग है और विश्व भर में होता है यह तीसरा निम्नतम-सतही तडाग।

बांबियां बहुत बड़ी

आस्ट्रेलिया की सफ़ेद चींटियां बनाती हैं बांबियां बहुत बड़ी। ये बांबियां २० फुट ऊँची और १०० फुट चौड़ी होती हैं।

मेरे यहाँ
पार्टी में आना,
तो पूरा घर
मत उठाये
चले आना!

ये क्या,
बड़ा मुँह,
छोटी बात!

मम्मी से कहो, २०० ग्रामवाला सिबाका टूथपेस्ट ले आयें. उसके अंदर तुम पाओगे एक नन्हा-मुन्ना जानवर!

Trikaya Grey HCG 7.90 HN

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां जुलाई १९९० के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

K. S. Vijayaker

S. B. Takalkar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ मई १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

मार्च की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो: **अक्षर अक्षर याद करो!**

द्वितीय फोटो: **पहला नंबर पास करो!!**

प्रेषक: **निष्ठा नायडू**, एच. आई. जी./सी-५५, शैलेंद्रनगर, रायपुर (म. प्र)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा: रु. ३६/-

चन्दा भेजने का पता:

डॉल्टन एजेन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिए:

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting them in any manner will be dealt with according to law.

"मेरि" गोल्ड कवरिंग गहने अपनी श्रेष्ठता, अनुपम 'लाजवाब' मनमोहक डिसैनों से दुनियाँ की सारी स्त्रियों के दिलों में शाश्वत जगह पाये हैं । आपको कैसा नम्बर चाहिये यह हमें लिखकर बताइये । वि.पि.पि. द्वारा भेजा जायेगा । मुफ्त केटलाग के लिये आज ही हमें लिखिये, ।

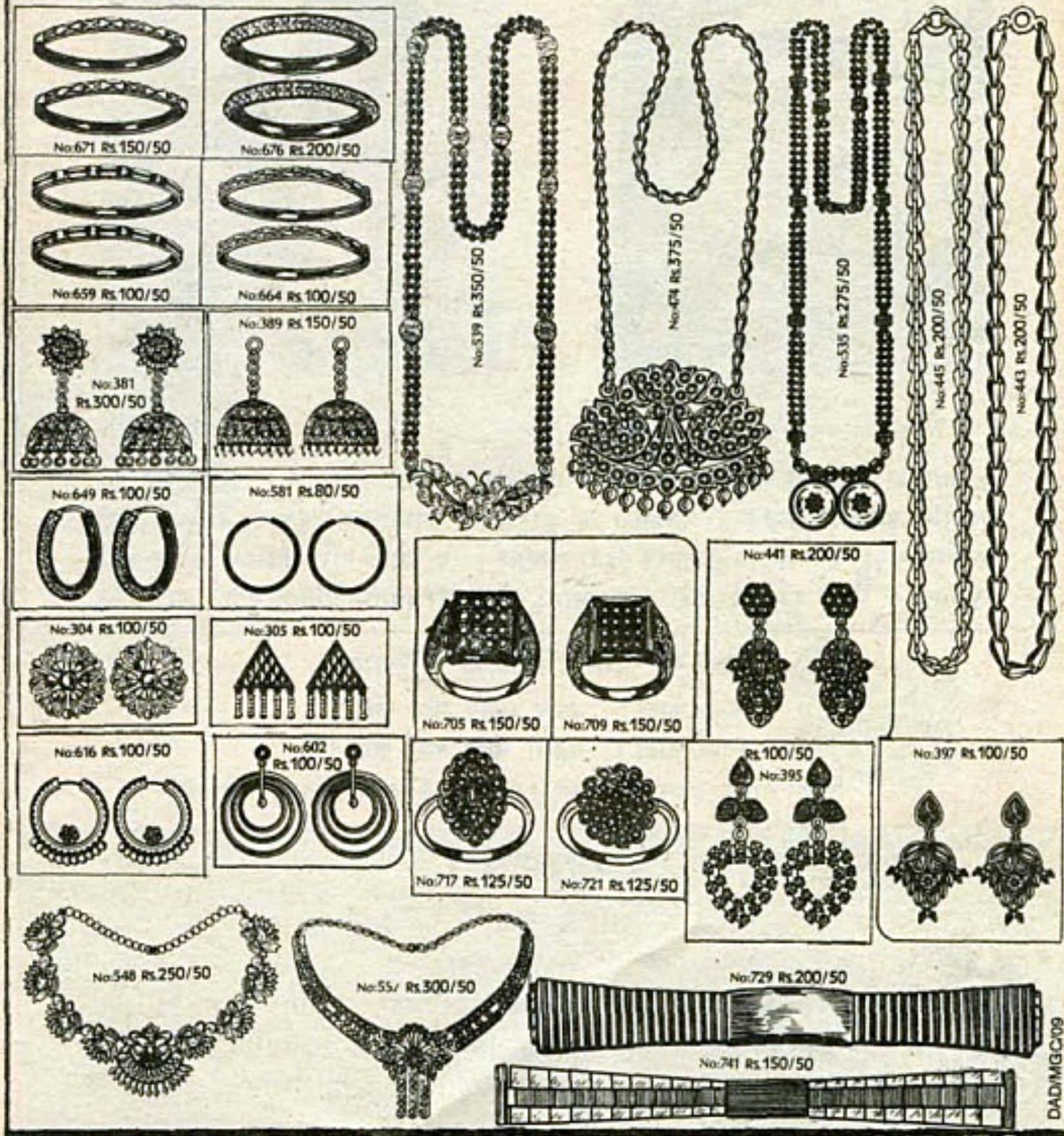

MERI GOLD COVERING WORKS

P.O.BOX 1405, 14, RANGANATHAN STREET
T.NAGAR, MADRAS - 600 017, PHONE: 444671

हाथों से ताली
पैरों में थिरकन,
आकाश में उड़ने को
करता हो मन...

आपकी मौजमस्ती है अधूरी सिर्फ़ फ़नबाइट से होगी पूरी.

कैम्पको की फ़नबाइट.
मलाईदार, कुरकुरी चॉकलेट...
अंदर कुरमुरे वेफ़र और
बाहर रसीली स्वादभरी चॉकलेट
मौज में मज़ा बढ़ाए... कितना मज़ा आए.

कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर

भारत के सबसे बड़े सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.

Other Campco chocolates: Milk, White, Treat, TURBO, Eclairs, Playtime, RUBIES, TOFFEE, Campco beverages: WINNER, COCOA

R K SWAMY/CL/7804/HIN

मीठी-मीठी बात आम-बगिया के मिट्ठू के साथ

ए देख! मेरी नई मैंगो स्वीट!

ए देख! मेरी नई मैंगो स्वीट!

बताऊँ मिट्ठू! इसमें असली आम है!

बताऊँ मिट्ठू! इसमें असली आम है!

शुऽऽऽऽऽप बदमाश! मेरी एक-नई मैंगो स्वीट खाकर देख!

शुऽऽऽऽऽप बदमाश! मेरी एक-नई मैंगो स्वीट खाकर देख!

पता है? इसका नाम क्या है? (????)

आम-रस!

क्या कहा! फिर बताना. (????)

आऽऽऽऽम-रऽऽऽऽऽस! बस, बच्चू! अमृत वचन बार-बार नहीं बोले जाते!

ही... ही... ही!

न्यूट्रीन

आम-रस

अंदर असली आम अंट.
बाहर अपार आनंद ... हरेक में.
मिट्ठू जैसे रंग-बिरंगे पैक में.

अशलिपत में असली आम

THE FINEST, WIDEST RANGE

India's largest selling sweets